राष्ट्र जागरण का शंखनाद

राष्ट्रदेव

पत्रिका

वर्ष : 34 अंक : 6 | 1 जून 2021 ज्येष्ठ कृ. 7 (युगाब्द 5123), वि.सं. 2078 | मूल्य 10 रुपये

कोरोना की लहर - 2

सेवारत संघ के स्वयंसेवक

कोरोना महामारी में स्वयंसेवकों द्वारा सेवा कार्य

बुलन्दशहर में घर-घर काढ़ा वितरण करते एवं खुर्जा में सैनिटाइजर का छिड़काव करते स्वयंसेवक

अमरोहा में समाजसेवी हरीशचन्द्र आर्य ने सेवा भारती को गाड़ी दान की मुरादाबाद में सेवा भारती द्वारा निःशुल्क अंतिम यात्रा वाहन सेवा का प्रारम्भ

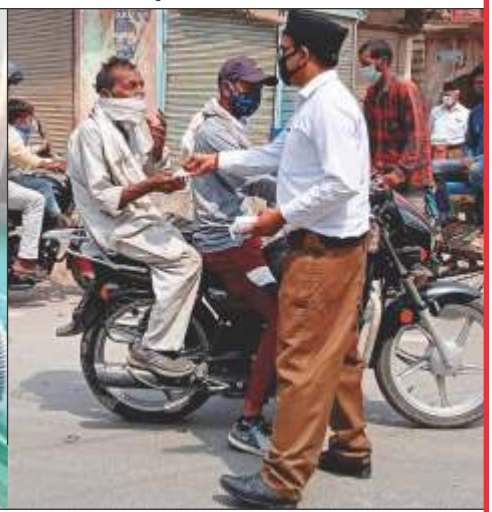

लक्ष्मीनगर में काढ़े के पैकेट तैयार करते स्वयंसेवक शामली में मास्क वितरण करते स्वयंसेवक

ज्येष्ठ कृ. 7 विक्रमी सम्वत् 2078, 1 जून, 2021 (पृष्ठ संख्या 28) मूल्य 10 रुपये

राष्ट्र जागरण का शंखनाद

राष्ट्रदेव

वर्ष - 34 अंक : 6

सम्पादक :

अजय मित्तल

मो. 9719545759

प्रबन्धक सम्पादक :

सुरेन्द्र सिंह

मो. 9412784857

कार्यालय :

राष्ट्रदेव

केशव भवन, 105, आर्यनगर,
सूरजकुण्ड रोड, मेरठ - 250001

ई मेल :

rashtradevmeerut@gmail.com

वेब साईड www.vskmeerut.org

सहयोग राशि

100 रुपये वार्षिक

प्रकाशन स्थल :

स्वामी - विश्व संवाद केन्द्र न्यास के लिये **मुद्रक, प्रकाशक** - आनन्द प्रकाश द्वारा उर्वशी प्रिन्टर्स, 110, नौचन्दी कम्पाउण्ड मेरठ से मुद्रित कर केशव भवन, 105, आर्यनगर, सूरजकुण्ड रोड, मेरठ (उ.प्र.) से प्रकाशित। **पंजीयन सं. 46176/87**

विज्ञापन दर

आवरण पृष्ठ- चतुर्थ बहुरंगी	रु. 25,000
आवरण पृष्ठ-तृतीय बहुरंगी	रु. 20,000
आवरण पृष्ठ- द्वितीय बहुरंगी	रु 20,000
भीतर का पूर्ण पृष्ठ बहुरंगी	रु. 15,000
सामान्य पूर्ण पृष्ठ	रु. 10,000
सामान्य आधा पृष्ठ	रु. 5,000

राष्ट्रदेव में छपने वाली सभी रचनाओं के विचार लेखकों के अपने हैं। सम्पादक का इनसे सहमत होना जरुरी नहीं है।

इस अंक में विशेष

सम्पादकीय
संघ के सेवाव्रती स्वयंसेवक 05

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की
आपदाओं में भूमिका 09

पश्चिम बंगाल में खूनी खेला
राजीव सचान 12

हिन्दू साम्राज्य दिनोत्सव
नरेन्द्र सहगल 14

सैन्ट्रल विस्टा प्रोजेक्ट का विरोध ?
युवराज पल्लव 16

स्थायी स्तम्भ

देश, विदेश एवं उर्दू अखबारों के समाचार, बाल-संसार, युवा लोक, नारी जगत, परिवार प्रबोधन, खेती-किसानी एवं स्वास्थ्य चर्चा

व्रत–पर्व–उत्सव

1 जून से 30 जून 2021 तक

दिनांक	वार	तिथि	व्रत एवं पर्व
2 जून	बुध	अष्टमी ज्ये.कृ.	कालाष्टमी व्रत
6 जून	रवि	एकादशी	अचला एकादशी व्रत
7 जून	सोम	द्वादशी	सोम प्रदोष व्रत
10 जून	गुरु	अमावस्या	अमावस्या, बड़मावस व्रत
14 जून	सोम	चतुर्थी ज्ये.शु.	गणेश चतुर्थी व्रत
15 जून	मंगल	पंचमी	मिथुन संक्रांति
18 जून	शुक्र	अष्टमी	श्री दुर्गाष्टमी
19 जून	शनि	दशमी	गंगा दशहरा
21 जून	सोम	एकादशी	निर्जला एकादशी व्रत
22 जून	मंगल	द्वादशी	भौम प्रदोष व्रत
24 मई	बुध	पूर्णिमा	वैशाख पूर्णिमा
27 जून	रवि	तृतीया आ.कृ.	गणेश चतुर्थी व्रत

पत्र

मानवता के दुश्मन

कोविड से बचने के लिए वैज्ञानिकों ने तेजी से वैक्सीन बनाने का प्रयास किया। जिसमें भारत ही एकमात्र ऐसा देश है जहाँ तीन प्रकार की वैक्सीन उपलब्ध है। लेकिन हमारे देश में मानवता के दुश्मनों की भी कमी नहीं है, कई ऐसे नेता और धर्म गुरु हैं जिन्होंने वैक्सीन का जम कर विरोध किया, यहाँ तक की एक पार्टी विशेष की वैक्सीन तक बताकर वैक्सीन नहीं लगवाने की घोषणा की। इस विरोध और फैलाये गये भ्रम के बहुत ही खतरनाक परिणाम सामने आये। कई स्थानों पर वैक्सीन लगाने वाले स्वास्थ्य कर्मियों के साथ मारपीट व पथराव किया गया और हाल ही में अलीगढ़ के जमालपुर स्वास्थ्य केन्द्र में एक एनएमओ नेहा खान ने तो सारी हदें ही पार कर दी। नेहा खान दवा सीरिंज में भरती, आये लोगों को वैक्सीन लगाने का नाटक करती व वैक्सीन लगाये बिना ही दवा से भरी सीरिंज कूड़े में फैंक देती थी। जाँच करने पर अनेक दवा से भरी सीरिंज कूड़े में मिली है। इस तरह का कार्य तो कोई मानवता का दुश्मन ही कर सकता है, केस दर्ज हो चुका है और कड़ी सजा मिलनी ही चाहिए लेकिन इस तरह के कृत्य के लिए नेहा खान या स्वास्थ्य कर्मियों पर पत्थर फेकनें वाले लोग ही जिम्मेदार नहीं है वो नेता और धर्मगुरु भी हैं जिन्होंने वैक्सीन के प्रति भ्रम फैलाया और धर्मविरोधी भी साबित करने का प्रयास किया इनको भी कड़ी सजा मिलनी चाहिए।

- सुनील विद्यार्थी, मोदीपुरम (मेरठ)

चीन पर अंकुश ज़रूरी

आज मानव जाति अभी तक के अपने सबसे बुरे दौर से गुज़र रही है। पूरे विश्व में लाखों लोग काल के गर्त में अकाल ही समा चुके है। हाल ही में हुए कई अन्तर्राष्ट्रीय शोधों ने जिसमें ब्रिटिश प्रोफ़ेसर एंगस डलगिश और नॉर्वे के वैज्ञानिक डॉ. बिरगर सोरेनसेन का शोध भी शामिल है इसी निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि कोरोना एक मानवजनित विषाणु है क्योंकि इसमें एक यूनिक फिंगरप्रिंट उपस्थित है जो इस वायरस को रिवर्स इंजीनियरिंग वर्जन से ढकने की कोशिश के कारण उत्पन्न हुआ है। चीन को ब्रिटिश औपनिवेशिक युग से सीख लेनी चाहिए जिन्होंने आधी दुनिया पर अपनी हुकूमत स्थापित करने के बाद भी अपना अस्तित्व किसी एक देश में भी बचा पाने में असफल रहें।

-पारस जैन, मेरठ

संघ बनाम जमात-ए-इस्लामी

राजस्थान सरकार ने एक शासनादेश जारी किया है कि कोई भी राज्य कर्मचारी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और जमात-ए-इस्लामी की सदस्यता नहीं ले सकता। यदि कोई ऐसा करता है तो उसके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही की जाएगी। इस संदर्भ में कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और जमात-ए-इस्लामी को राजस्थान सरकार ने एक तराजू में कैसे तोल दिया? क्योंकि राष्ट्रीय ही नहीं अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को एक सामाजिक संगठन मान चुका है। भारतीय संविधान किसी भी सरकारी कर्मचारी को सामाजिक संगठन का सदस्य होने से नहीं रोकता। साथ ही संघ के 95 वर्षों के कार्यकाल में संघ के समस्त क्रियाकलाप देश की एकता, अखण्डता को बनाए रखने व राष्ट्र को अपने प्राचीन वैभव को पुनः प्राप्त कराने के लिए थे और हैं। देश पर जब-जब भी प्राकृतिक आपदा अथवा सीमाओं पर संकट के बादलों से घिरा तब-तब संघ के स्वयंसेवक एक सैनिक की भांति सरकार और सेना के साथ खड़े दिखे। संघ की इस देशभक्ति के कारण ही 1963 में तत्कालीन प्रधानमंत्री ने संघ को गणतंत्र दिवस की परेड में सादर आमन्त्रित किया था। इसके विपरीत जमात-ए-इस्लामी के राष्ट्र विरोधी कृत्यों से पूरा देश परिचित है। साथ ही इसके नाम से भी इसके मजहबी संगठन होना स्पष्ट है। जमात का कोई ऐसा कार्यक्रम नहीं जो राष्ट्र के हित में हो। वह मात्र इस्लाम के प्रचार व प्रसार का एक माध्यम है। अतः गहलोत सरकार को इस कानून पर पुनः विचार करना होगा अन्यथा संघ न्यायालय के द्वार जाएगा।

-डॉ नरेन्द्र टोंक, मेरठ

राष्ट्रदेव

* राष्ट्रदेव स्वयं पढ़े तथा दूसरों को भी पढ़ायें।
* राष्ट्रदेव में प्रकाशित सामग्री आपको कैसी लगी,पत्र लिखें।
* एक से अधिक राष्ट्रदेव आते हैं तो कृपया राष्ट्रदेव कार्यालय पर क्रमांक संख्या सहित सूचित करें।
* सहयोग राशि मनी आर्डर अथवा राष्ट्रदेव के यूनियन बैंक, मेरठ (IFSC : UBIN0530603) के खाता सं. 306002010108373 में (PAN AAATV5642B) भेजकर सहयोग करें। यह सहयोग आप यूनियन बैंक की किसी भी शाखा में जमा कर सकते हैं।

संघ के सेवाव्रती स्वयंसेवक

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की आलोचना-प्रशंसा, निंदा-स्तुति करने वाले दोनों प्रकार के लोग समाज में सदा मौजूद रहे हैं। पर इस सबसे बेखबर, अप्रभावित रहकर समाज सेवा करते जाना संघ-स्वयंसेवकों का स्वभाव बन गया है। तीसरे सरसंघचालक बाला साहेब देवरस ने इस स्वभाव के पीछे शाखाओं द्वारा दिया गया संस्कार ही मूल में बताया था। उनका यह विचार काफी प्रसिद्धि पा चुका है ''संघ की शाखा खेल खेलने या कवायद (परेड) करने मात्र का स्थान नहीं है। अपितु यह सज्जनों की सुरक्षा का बिन बोले अभिवचन है। महिलाओं के प्रति गरिमायुक्त सम्मान और समानता के व्यवहार की आश्वस्ति है। नवयुवकों को अनिष्ट व्यसनों से मुक्त रखने वाला विद्यालय है। समाज पर आने वाली आपदाओं में त्वरित व निरपेक्ष सहायता मिलने का आशा-केन्द्र है। देश-विरोधी ताकतों पर धाक स्थापित करने वाली राष्ट्रीय शक्ति है और सबसे बढ़कर समाज-जीवन के विविध क्षेत्रों में सुयोग्य कार्यकर्ता उपलब्ध कराने वाली संस्कारपीठ है। इस कथन में चौथा वाक्य है, आकस्मिक आपदाओं में त्वरित व निरपेक्ष सहायता प्रदान करने वाला आशा-केन्द्र संघ है। इस तथ्य का प्रत्यक्ष परिचय गत कुछ वर्षों में निरन्तर मिला है, क्योंकि आपदायें निरन्तरता के साथ देश पर टूटी पड़ रही हैं। वर्तमान विपत्ति यानी कोरोना का यह दूसरा साल है। 2020 में संघ के पौने छह लाख स्वयंसेवकों ने डेढ़ करोड़ प्रवासी श्रमिकों सहित कुल ढाई करोड़ देश वासियों को राहत सामग्रियाँ पहुँचाई थीं। इनके अतिरिक्त सैनिटाइजेशन करना, मास्क बांटना, साबुन वितरण, वैयक्तिक व सामूहिक हवनों द्वारा कोरोना वाइरस के खात्मे के प्रयास आदि कार्य चलाये थे। राहत सामग्री के अंतर्गत खाद्यान्न व दवाइयों की किट के वितरण तथा तैयार भोजन के पैकेट जरुरतमंदों तक पहुँचाने का काम शामिल रहा है। पेय जल की बोतलें भी करोड़ों की संख्या में बांटी गयी।

प्रवासी कामगारों को भोजन-पानी-दवाइयाँ देने का काम जिस पैमाने पर एवं जिस दक्षता के साथ स्वयंसेवकों ने किया, इसके लिये 1.5 करोड़ श्रमिकों के साथ रेलवे के डिविजिनल मैनेजर, जिन्होंने मुरादाबाद जंकशन पर यह कार्य तेजी के साथ करते स्वयंसेवकों को देखा, कभी नहीं भूलेंगे। मेरठ प्रान्त (प. उत्तर प्रदेश) में नगर-नगर के स्टेशन, बस अड्डे तक मजदूरों को निजी/सार्वजनिक वाहनों द्वारा पहुँचाना उनकी स्मृतियों से कभी न मिटने वाली घटना बनी रहेगी। इस वर्ष यानी 2021 में भी इस पश्चिम उत्तर प्रदेश में 90,000 स्वयंसेवक अपना सेवा धर्म फिर से निभा रहे हैं।

इस बार की आपदा जिस तेजी से आगे बढ़ी है, उसने सभी को हतप्रभ किया है। अस्पतालों की व्यवस्थायें बेहद अपर्याप्त सिद्ध हुई हैं। ऑक्सीजन की आपूर्ति लगभग मई के मध्य तक चरमराई हुई थी। ऊपर से कुछ राजनीतिक दलों के नेताओं ने सिलिंडरों की जमाखोरी जैसे कुकृत्य भी किये। अब मई का अंत आते-आते स्थिति में पर्याप्त सुधार हो गया है। कई शहरों जैसे मेरठ, गाजियाबाद, नोएडा, ग्रेटर नोएडा में स्वयंसेवकों ने छोटा हाथी जैसे वाहनों के द्वारा प्रतिदिन ऑक्सीजन जरुरतमंदों तक पहुँचाई है। 2020 में शासन-प्रशासन जो खाद्य सामग्री के पैकेट बनवाता था, उन्हें संघ-सेवा भारती के माध्यम से बंटवाने को वरीयता देता था। यह अनुभव पश्चिम उत्तर प्रदेश का ही नहीं लगभग पूरे देश का था।

सेवा कार्य में प्रामाणिकता की छाप संघ ने अपने जन्म से छोड़ी है। डॉ. हेडगेवार नागपुर के ''अनाथ बसति गृह'' के संचालकों में थे। इसमें अंग्रेजी काल में लगातार पड़ते आ रहे अकाल के कारण अनाथ हुए बच्चों को पाला-पोसा-पढ़ाया-लिखाया जाता था। उत्कृष्ट व्यवस्था थी। साथ ही कोई ईसाई मिशनरी किसी बालक को अपहरण कर ले जा न सके,

इसकी भी चौकीदारी डॉक्टर जी रखते थे। एक ईसाई नन द्वारा दो बच्चों को भगाकर ले जाने के बाद उनकी वापसी और सुरक्षा का पूरा काम उन्होंने स्वयं होकर किया था।

1947 में देश-विभाजन के दिनों में संघ द्वारा हिन्दुओं की सुरक्षा तथा भोजन-दवा की व्यवस्था का भीमकाय कार्य किया गया। पश्चिम में ''पंजाब राहत समिति'' एवं असम, बंगाल की ओर ''वास्तुहारा सहायता समिति'' बनाई गयी। श्री गुरुजी के आह्ाान पर पचास लाख (आज के लगभग 400 करोड़) का कोष बना। 6 मास से अधिक समय तक प्रतिदिन लगभग 1 लाख लोगों ने भोजन किया। ठहरने तथा चिकित्सा के भी विराट प्रबंध किये गये और सबसे पहले तो सुरक्षा थी। पाँच हजार स्वयंसेवकों और 55 प्रचारकों के जीवन बलिदान हुये। भारत के रक्षामंत्री सरदार बलदेव सिंह के आग्रह पर भारतीय सैनिक टुकड़ियों के साथ स्वयंसेवकों ने शहरो।-कस्बों-गाँवों में घूम-घूम कर अपहृता हिन्दू माता-बहनों की खोज कर सैकड़ों हजारों को भारत पहुँचाया।

रेडी फॉर सैल्फलैस सर्विस

कश्मीर पर पाक आक्रमण (1947-48), चीनी आक्रमण (1962), पाकिस्तान के 2 हमले (1965, 1971) देश के प्रतिरोध में संघ की सहभागिता अप्रतिम थी। 1962 में तेजपुर (असम) की रक्षा में संघ ने सेना का जैसा सहयोग किया, उससे प्रभावित होकर प्रधानमंत्री नेहरू ने 1963 की गणतंत्र दिवस (26 जनवरी) परेड में संघ के 3000 स्वयंसेवकों को भाग लेने के लिये आमंत्रित किया था।

प्राकृतिक आपदाओं (1967 में बिहार का अभूतपूर्व अकाल, जिसमें स्वयंसेवकों के सेवा कार्य ने लोकनायक जयप्रकाश नारायण को अन्तकरण तक प्रभावित किया।) में स्वयंसेवकों द्वारा तीव्र गति से बचाव व राहत हेतु कूद पड़ना अनेक महापुरुषों को प्रभावित करता रहा है। 1977 में आंध्र प्रदेश में भयंकरतम चक्रवात आया। जान-माल की क्षति अकल्पनीय थी। वहाँ स्वयंसेवकों का सेवाकार्य देखकर गांधी जी और विनोबा जी के शिष्य सर्वोदयी नेता प्रभाकर राव ने आर.एस.एस. के नाम को नया अर्थ दिया। उन्होंने कहा- संघ यान रेडी फॉर सैल्फलैस सर्विस। 1970 के दशक में अनेक आपदाओं ने इस नामकरण को बार-बार सत्य सिद्ध किया। 1975 की चसनाला (बिहार) कोयला खान त्रासदी, 1978 में मोरबी (गुजरात) में बाढ़ का तांडव, उसी वर्ष दिल्ली में यमुना की प्रबल बाढ़ सभी के समय स्वयंसेवक सबसे आगे थे। इनके बाद भी 1987 के गुजरात के सूखे के समय, 1996 में कजाख-सऊदी विमानों के टक्कर के समान चरखीदादरी (हरियाणा) में, उसी साल डबवाली (हरियाणा) के प्रलयंकर अग्निकांड के समय, 1994 में सूरत और अन्यत्र प्लेग के मुकाबले में, 1997 में मिजोरम के रियांग शरणार्थियों की सुरक्षा में, 1993 में उत्तरकाशी भूकम्प से लेकर, 2012 के केदारनाथ की जलप्रलय के दौरान जैसी आपदाओं-विपत्तियों की कमी नहीं, उसी प्रकार तत्काल सेवा कार्य में जुट जाने वाले स्वयंसेवकों की संख्या भी कभी कम नहीं होती।

समिधा सम हम जलें

सेवा के संदर्भ में स्वयंसेवकों का दृष्टिकोण एक गीत की पंक्ति द्वारा सुन्दर अभिव्यक्ति पा गया है- 'सेवा है यज्ञकुण्ड, समिधा सम हम जलें''। इस दृष्टि के साथ ही संत रविदास के दोहे ''दीन दुखी करि सेव मही लागी रह्यो रविदास। निसिबासर की सेव सो प्रभु मिलन की आस'' को अपने जीवन में उतारने का सच्चा प्रयास स्वयंसेवकों द्वारा होता दीखता है।

अजय मित्तल

संकल्प, सजगता, सक्रियता व सामूहिक प्रयासों से मिलेगी विजय : डॉ. मोहन भागवत

नई दिल्ली। 'कोविड रिस्पॉन्स टीम' द्वारा आयोजित 'हम जीतेंगे-पाजिटीविटी अनलिमिटेड' व्याख्यानमाला का 11 मई से 15 मई तक प्रतिदिन सायं 4:30 बजे किया गया। व्याख्यानमाला का उद्देश्य कोरोना संकट का सामना करने के लिए समाज में एक सकारात्मक वातावरण तैयार करने में सहयोग करना था।

व्याख्यान माला में सम्बोधित करते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि दृढ़ संकल्प, सतत प्रयास व धैर्य के साथ भारतीय समाज कोरोना पर निश्चित ही विजय प्राप्त करेगा। यह समय गुण-दोषों के बारे में चर्चा करने का नहीं है, बल्कि इस समय समाज के सभी वर्गों को एक साथ मिलकर सामूहिक प्रयास करने होंगे ताकि इस संकट से हम पार पा सकें।

उन्होंने कहा कि पहली लहर के बाद हम गफलत में आ गए और अब तीसरी लहर आने की बात हो रही है। इससे अर्थव्यवस्था, रोजगार, शिक्षा आदि पर गहरा प्रभाव पड़ा है। आने वाले दिनों में अर्थव्यवस्था पर और असर पड़ सकता है, इसलिए इसकी तैयारी हमें अभी से करनी होगी। भविष्य की इन चुनौतियों की चर्चा से घबराना नहीं है, बल्कि ये चर्चा इसलिए जरूरी है ताकि हम आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए समय रहते तैयारी कर सकें।

व्याख्यान माला में वात्सल्य ग्राम वृंदावन से पूज्य दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा ने अपने उद्‌बोधन में कहा, 'विपरीत परिस्थितियों में ही समाज के दायरे के धैर्य की परीक्षा होती है। इन विपरीत परिस्थितियों में जबकि हमारा पूरा देश एक विचित्र महामारी से जूझ रहा है, ये वो समय है, जब हमें अपनी आंतरिक शक्ति को जागृत करना है।'

उन्होंने कहा, 'मनुष्य के साहस व संकल्प के सामने बड़े-बड़े पर्वत तक टिक नहीं पाते। नदी का प्रवाह जब प्रवाहित होता है तो वो बड़ी-बड़ी चट्टानों को रेत में परिवर्तित करने का सामर्थ्य रखता है। इसलिए इस विकट परिस्थिति में असहाय होने से समाधान नहीं होगा, अपनी आंतरिक शक्ति को जागृत करना होगा।'

उन्होंने कहा कि स्वयं को सजग, सक्रिय व स्वस्थ रखते हुए धैर्य व अनुशासन के साथ हमें सेवा कार्यों में जुटना चाहिए। कोरोना के रोगियों को अस्पतालों में बिस्तर, ऑक्सीजन आदि उपलब्ध हों, इसके प्रयास करने चाहिए। सेवा कार्यों में लगे संगठनों को सहयोग करना चाहिए। अपने आस-पास के उन परिवारों की चिंता करनी चाहिए जिन पर आर्थिक संकट है। घर पर खाली न बैठें, कुछ नया सीखें, परिवारों में संवाद बढ़ाएं।

सरसंघचालक ने कहा कि यश-अपयश को पचा कर लगातार आगे बढ़ने की हिम्मत रखनी होगी। भारत एक प्राचीन राष्ट्र है तथा इस पर पूर्व में कई विपत्तियाँ आईं। लेकिन हर बार हमने उन पर विजय प्राप्त की है, इस बार भी हम विजय प्राप्त करेंगे। इसके लिए हमें अपने शरीर से कोरोना को बाहर रखना है तथा मन को सकारात्मक रखना है। इन कठिन परिस्थितियों में निराशा की नहीं, बल्कि इससे लड़कर जीतने का संकल्प लेने की जरूरत है। उन्होंने कहा, ऐसी बाधाओं को लांघ कर मानवता पहले भी आगे बढ़ी है और अब भी आगे बढ़ती रहेगी।

पाँच दिवसीय व्याख्यान माला में कांचीपुरम पीठ के पूज्य शंकराचार्य विजयेन्द्र सरस्वती, श्री पंचायती अखाड़ा-निर्मल के पीठाधीश्वर महन्त सन्त ज्ञानदेव सिंह, ईशा फाउण्डेशन के संस्थापक एवं प्रसिद्ध अध्यात्मिक गुरु जग्गी वासुदेव, प्रसिद्ध व्यवसायी अजीम प्रेमजी, प्रख्यात कलाकार सोनल मानसिंह, आर्ट ऑफ लिविंग के संस्थापक एवं आध्यात्मिक गुरु श्री श्री रविशंकर, सामाजिक कार्यकर्ता पद्मश्री निवेदिता भिड़े आदि समाज के सभी क्षेत्रों के प्रसिद्ध विद्वानों ने भी अपने विचार रखे।

मेरठ प्रान्त में सेवा कार्य

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मेरठ प्रान्त (पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मेरठ, बागपत, मुजफ्फरनगर, शामली, सहारनपुर, बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुर, अमरोहा, सम्भल, बुलन्दशहर, गौतमबुद्धनगर, गाजियाबाद, हापुड़ के 14 जिले) में सेवा भारती एवं संघ के कार्यकर्ताओं द्वारा कोरोना की दूसरी लहर में 25 मई तक किये गये सेवा कार्यों का वृत्त-

हेल्पलाइन सेंटर्स	
कितने स्थानों पर	123

वैक्सीनेशन	
कितने स्थानों पर केन्द्र	334
टीकाकरण संख्या	349133
कितने स्थान पर सहयोग	266
कार्यकर्ता संख्या	1089

आइसोलेशन केन्द्र	
कितने शहरों में	26
बेड संख्या	542
सेवित जन	412
कार्यकर्ता	312

कोविड केयर केन्द्र	
कितने शहरों में	07
बेड संख्या	200
सेवित जन	461
ऑक्सीजनयुक्त बेड	163
कार्यकर्ता	293

सरकारी कोविड केयर केन्द्र	
कितने शहरों में	43
कार्यकर्ता	421

ऑनलाइन डॉक्टर सलाह	
कितने स्थानें पर	294
सक्रिय डॉक्टर्स	374
सेवित जन	11973

संक्रमित परिवारों/व्यक्तियों को भोजन	
कितने स्थानों	1109
अब तक कितने पैकेट	33017

रक्तदान	
कितने स्थानों पर	89
रक्त यूनिट	358

प्लाज्मा दान	
कितने स्थानों पर	108
सेवित जन	313

आयुर्वेदिक काढ़ा वितरण	
कितने स्थानों पर	1130
सेवित जन	141042

समुपदेशन केन्द्र (काउंसलिंग)	
स्थान	119
सेवित जन	20454

अन्तिम संस्कार में सेवा	
कितने स्थानों पर	95

शव वाहन सेवा	
कितने स्थानों पर	23

अन्य सेवा कार्य	
मास्क वितरण	**78613**
सेनेटाइजर	**9040**
पी. पी. किट	**1040**
राशन किट	**4073**
दवाई किट	**19349**
ऑक्सीजन सिलेण्डर में सहयोग	**4988**
ऑक्सीजन कंसेटर संख्या	**118**
सेवित जन	**2060**

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की आपदाओं में भूमिका

- डॉ. अनिल त्यागी

जब भी देश में कोई आपदा आती है तो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता उस आपदा की घड़ी में समाज की सेवा के लिए सबसे पहले पहुँचते हैं और तब तक उस सेवा कार्य में लगे रहते हैं, जब तक उस संकट पर विजय ना पा लें। मेरठ प्रान्त के संघ कार्यकर्ता भी हर आपदा में तन-मन-धन पूर्वक सेवा में सहयोगी रहे हैं। नेपाल का भूकम्प हो या गुजरात का। उत्तराखण्ड की आपदा हो अथवा केरल या कश्मीर की भयंकर बाढ़, संघ के कार्यकर्ता तुरन्त राहत और बचाव कार्य में लग जाते हैं। जब 2020 में मानवता पर कोरोना महामारी का भयंकर संकट आया, तब आर.एस.एस. मेरठ प्रान्त के कार्यकर्ताओं ने अपनी जान की बाजी लगाकर, इस संकट से मानवता को बचाने हेतु पूर्ण मनोयोग से सेवा कार्य किये। 2020 में जब मजदूर विस्थापित होकर अपने घर के लिए पैदल चलने को मजबूर थे, तो उस समय मेरठ प्रान्त के कार्यकर्ताओं ने अपने प्रान्त के मजदूर भाइयों की सहायता तो की ही, साथ ही साथ दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान के प्रान्तों से आने वाले मजदूरों की भी पूरी तरह सेवा की। उनके आवास की व्यवस्था, भोजन पानी की, दवाई, उनके घर पहुंचाने तथा रेलवे स्टेशन तक पहुंचाने की व्यवस्था, पैदल चलने वालों के लिए चप्पल, बच्चों के लिए दूध इत्यादि की व्यवस्था की। जिनके घर में राशन नहीं था, उनकी राशन देकर सहायता की। बच्चों के लिए निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था की। जिनका रोजगार चला गया, उनके रोजगार की व्यवस्था की। ये सभी कार्यों को संघ के कार्यकर्ताओं ने अपने द्वारा जुटाए गए संसाधनों से किया। उसमें सरकार से कोई भी अनुदान नहीं लिया। यहाँ तक कि कार्यकर्ताओं ने पूर्ण समय लगाकर प्रशासन के सहयोग का कार्य भी किया। समाज सेवा में लगे अनेक स्वयंसेवक स्वयं भी संक्रमित हो गये और कुछ की जान भी चली गयी।

इसी तरह जब कोरोना का दूसरा वैरिएंट 2021 में आया, जो पहले से भी बहुत अधिक भयंकर था। समाज के सामने ऑक्सीजन की कमी, हॉस्पिटल में बेड की कमी, प्लाज्मा की कमी की समस्याएं उत्पन्न हो गयी। संक्रमण की गति भी पहले से कई गुना तेज थी, तब भी संघ के कार्यकर्ताओं ने सेवा कार्य नहीं छोड़ा। वर्तमान में पूरे प्रान्त में 123 स्थानों पर हेल्पलाइन केन्द्र चल रहे हैं। 334 स्थानों पर वैक्सीनेशन केंद्र बनाया गये, 349133 लोगों को टीका लगाया, जिसमें 1089 स्वयंसेवक सेवा दे रहे हैं। पूरे प्रान्त में 26 स्थानों पर आइसोलेशन केन्द्र चलाए जा रहे है। 542 बेड की व्यवस्था है, जिसका लाभ अभी तक 412 लोग ले चुके हैं और स्वस्थ होकर घर गए हैं। 542 बेड में से 163 बेड ऑक्सीजन युक्त है। 43 सरकारी कोविड केयर केन्द्र जो सरकार चला रही है, उन पर भी 421 स्वयंसेवक सेवा कार्य कर रहे हैं। पूरे प्रान्त में 374 डॉक्टरों द्वारा 294 स्थानों पर अभी तक 11,973 लोगों को निःशुल्क घरों पर ही परामर्श दिया गया। 1109 स्थानों पर संक्रमित परिवारों के लिए अभी तक 33017 व्यक्तियों के भोजन की व्यवस्था की गई है। 89 स्थानों पर लगभग 700 यूनिट रक्त की व्यवस्था की गई। 108 स्थानों पर 313 लोगों को प्लाज्मा दिया गया। 14,1042 लोगों तक काढ़े का वितरण हुआ। जो लोग बीमारी के कारण अवसाद में थे, उनकी काउंसलिंग 119 स्थानों पर की जा रही है, जिसका लाभ अभी तक 20,454 लोग को मिल चुका है। पूरे प्रान्त में 23 शव वाहन निःशुल्क सेवा दे रहे हैं। बहुत से कार्यकर्ता अंतिम संस्कार भी करा रहे हैं। इसके अलावा मास्क वितरण, सैनिटाइजर, पी.पी.किट, राशन किट तथा दवाई किट, ऑक्सीजन सिलेण्डर की व्यवस्था की जा रही है। पूरे प्रान्त में यह सेवा कार्य स्वयंसेवकों के द्वारा किया जा रहा है, ताकि समाज का कोई भी व्यक्ति भयंकर संकट काल में प्रभावित ना हो। मेरठ प्रान्त के कार्यकर्ता इस तरह के सेवा कार्य समाज एवं राष्ट्र के हित में निरन्तर करते चले आ रहे हैं।

आइसोलेशन केन्द्र, नेहरू नगर, गाजियाबाद

शहर से गाँव तक जीवन रक्षा कर रहे हैं संघ के 'कोविड आइसोलेशन केन्द्र'

डॉ. प्रशान्त कुमार

पूरी दुनिया के साथ साथ भारत भी कोरोना की इस दूसरी लहर से जूझ रहा है। कई अवसरों पर ऐसा देखने को मिल रहा है जहाँ अपने या निकट सम्बन्धी भी कोरोना पीड़ित व्यक्ति से बचते नजर आ रहे हैं, ऐसे में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अनेक स्वयंसेवक देश विदेश में कोरोना पीड़ित व्यक्तियों एवं जरूरतमंदों की निस्वार्थ भाव से सेवा में जुटे हुए हैं।

इसी भाव एवं समर्पण के साथ मेरठ प्रान्त में भी सेवा भारती द्वारा अलग-अलग स्थानों पर कोरोना पीड़ितों के लिए आइसोलेशन केन्द्र बनाए गए हैं, जिन्हें स्वयंसेवकों द्वारा संचालित किया जा रहा है।

मेरठ जिले में 4 आइसोलेशन केन्द्र संचालित हैं। इनमें मेरठ महानगर स्थित माधव कुंज, शताब्दी नगर में 50 बेड का आइसोलेशन केन्द्र चल रहा है। यहाँ से अनेक कोरोना पीड़ित स्वस्थ होकर अपने घर चले गए हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में कोरोना के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए सेवा भारती द्वारा रार्धना, गणेशपुर तथा मऊखास जैसे ग्रामीण क्षेत्रों में भी 5-5 बेड के आइसोलेशन केन्द्र शुरू कर दिए गए हैं। जिला कार्यवाह कमल प्रताप ने बताया कि ग्रामीण क्षेत्रों के इन आइसोलेशन केन्द्रों पर आवश्यकता पड़ने पर बेड की संख्या बढ़ाई जा सकती है। मेरठ के इन सभी केन्द्रों पर डॉक्टर, दवाई, ऑक्सीजन, भोजन इत्यादि की सुविधा भी निःशुल्क उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त होम आइसोलेशन में रह रहे कोरोना पीड़ित, जिन्हें ऑक्सीजन की आवश्यकता है, उनके लिए ऑक्सीजन बैंक भी स्वयंसेवकों द्वारा चलाया जा रहा है। विभाग प्रचार प्रमुख डॉ. नीरज सिंघल ने बताया कि ग्रामीण क्षेत्रों के लिए कोरोना सम्बंधी दवाई के सात हजार पैकेट तैयार कराए गए हैं। इस पैकेट में 9 प्रकार की दवाई के साथ काढ़े का पैकेट भी शामिल है, यह सभी ग्रामीण क्षेत्रों में निःशुल्क वितरित किया जा रहा है। साथ ही सेवा भारती द्वारा मेरठ के प्रत्येक गाँव में ऑक्सीमीटर व थर्मामीटर भी उपलब्ध कराने का प्रयास किया जा रहा है।

गाजियाबाद में भी सेवा भारती द्वारा अलग-अलग स्थानों पर आइसोलेशन केन्द्र बनाए गए हैं इनमें नेहरू नगर स्थित सरस्वती विद्या मंदिर में 50 बेड का केन्द्र संचालित है। पिछले 15 दिनों में 150 से भी ज्यादा मरीज कोरोना को मात देकर घर लौट गए हैं। इसके अतिरिक्त **वैशाली** के राजेन्द्र नगर स्थित सरस्वती विद्या मंदिर में 25 बेड के दो आइसोलेशन केन्द्र, इंदिरापुरम के शक्ति खण्ड स्थित कैलाश मानसरोवर भवन में भी 50 बेड का आइसोलेशन केन्द्र चल रहा है। विभाग प्रचार प्रमुख मधुर कुमार ने बताया कि इन सभी केन्द्रों पर ऑक्सीजन, दवाइयाँ, फलाहार, भोजन एवं आयुर्वेदिक काढ़ा निःशुल्क उपलब्ध कराया जा रहा है। यहां पर मरीजों को लाने ले जाने के लिए एम्बुलेंस की सुविधा भी है। वहीं इन केन्द्रों पर कोरोना की निःशुल्क जांच भी की जा रही है।

सेवा भारती द्वारा **नोएडा** में भी तीन आइसोलेशन सेंटर चलाए जा रहे हैं इनमें सरस्वती शिशु मंदिर सेक्टर 12, जिसमें 22 बेड हैं। इस केंद्र से 82 कोरोना मरीज स्वस्थ होकर अपने घर चले गए हैं। सेक्टर 93 में स्थित सामुदायिक केंद्र में भी 50 बेड का आइसोलेशन सेंटर स्वयंसेवकों के निस्वार्थ

आइसोलेशन केन्द्र, माधवकुंज, मेरठ

सेवाभावी एवं कर्तव्य परायणता के चलते संचालित है, इस केन्द्र से भी 22 मरीज स्वस्थ होकर घर चले गए हैं। सेक्टर 92 में भी इसी प्रकार का केन्द्र शुरू किया गया है। सह प्रान्त प्रचार प्रमुख डॉ. अनिल ने बताया कि इन सभी केन्द्रों पर ऑक्सीजन, डॉक्टर, दवाई, भोजन इत्यादि सुविधाएं स्वयंसेवकों द्वारा निःशुल्क उपलब्ध कराई जा रही हैं।

बिजनौर में भी सेवा भारती द्वारा यशपाल आर्य सरस्वती विद्या मंदिर में 20 बेड का आइसोलेशन केन्द्र संचालित है। इस केन्द्र से 26 मरीज ठीक हो कर घर लौट गए हैं। विभाग प्रचार प्रमुख मयंक ने बताया कि इस केन्द्र पर दिन में तीन बार डॉक्टर देखने आते हैं, चार नर्स नियमित रूप से सेंटर पर ही रहती हैं तथा कई स्वयंसेवक भी अलग-अलग पालियों में सेवा कर रहे हैं। दवाई, ऑक्सीजन, भोजन इत्यादि की सुविधा स्वयंसेवकों द्वारा निःशुल्क उपलब्ध कराई जा रही है।

इसी प्रकार **मुरादाबाद** में भी सेवा भारती द्वारा इस तरह का एक आइसोलेशन केन्द्र संचालित है, जिसमें 25 बेड की व्यवस्था है।विभाग प्रचार प्रमुख पवन जैन ने बताया कि **रामपुर** में भी 10 बेड का आइसोलेशन केन्द्र शुरू किया गया है ।

इसी तरह **सम्भल** जिले में **बहजोई** के बीएमवीएल कॉलेज में 20 बेड का तथा **चंदौसी** के सरस्वती शिशु मंदिर में 25 बेड का आइसोलेशन केन्द्र शुरू कर दिया गया है। इन केन्द्रों पर भी स्वयंसेवकों द्वारा निःशुल्क रूप से ऑक्सीजन, दवाई, भोजन इत्यादि की व्यवस्था उपलब्ध है।

इसके अतिरिक्त भी अनेक स्वयंसेवक अपने-अपने स्थानों पर अपनी सामर्थ्यानुसार इस महामारी में लोगों का सहयोग कर रहे हैं। 'सेवा परमो धर्मः' ही इनका मूल मंत्र है।

सेवा भारती के आइसोलेशन केन्द्र में गर्भवती महिला ने कोरोना हराया

मनु, सास–ससुर एवं स्वयंसेवक विजयी मुद्रा में

हापुड़ जिले के बहादुरगढ़ गाँव में भी सेवा भारती द्वारा एक आइसोलेशन केन्द्र संचालित किया जा रहा है, जिस पर कोरोना मरीजों के लिए सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध हैं। बहादुरगढ़ के इसी केन्द्र पर पास ही के गाँव पसवाड़ा निवासी गर्भवती महिला मनु ने कोरोना पर विजय प्राप्त की। स्वयंसेवकों की दस दिन तक निरन्तर सेवा एवं मनु आत्मविश्वास के फलस्वरूप उसकी रिपोर्ट निगेटिव आ गई।

स्वस्थ होकर घर पहुँची मनु ने बताया कि तबीयत खराब होने पर उसे घर के लोग गजरौला अस्पताल लेकर पहुँचे परन्तु चिकित्सक ने मेरठ अस्पताल के लिये रैफर कर दिया। मेरठ अस्पताल में कोरोना पॉजीटिव रिपोर्ट आने के बाद उसे अस्पताल से बाहर कर दिया। संकट की इस घड़ी में परिवारवाले उसे बहादुरगढ़ में सेवा भारती के आइसोलेशन केन्द्र में ले कर आये। केन्द्र में संघ के स्वयंसेवकों की लगातार दस दिन तक दिन-रात सेवा के कारण वह स्वस्थ हो गयी और उसकी रिपोर्ट निगेटिव आ गई। मनु के स्वस्थ होने पर उसके सास-ससुर और पति ने सेवा भारती और स्वयंसेवकों का आभार प्रकट करते हुए कहा कि स्वयंसेवकों ने मनु के साथ ही गर्भ में पल रहे तीन माह के बालक की भी जान बचाई है।

बहादुरगढ़ के इस सेवा केन्द्र पर डॉ. विक्रान्त, उत्तम चौहान, देवव्रत चौहान, शुभम चौहान, कुंवर पाल, कृष्णा आदि अनेक स्वयंसेवक अपनी सेवा दे रहे हैं और गाँव-गाँव जाकर भी लोगों की जाँच कर रहे हैं।

अपने ही देश में शरणार्थी बने लोग

राजीव सचान

आखिरकार सुप्रीम कोर्ट ने पश्चिम बंगाल में चुनाव बाद हिंसा का शिकार हुए लोगों की पीड़ा सुनने का समय निकाल लिया, लेकिन इसमें उसे 20 दिन से अधिक का समय लग गया और अभी उसने इस मामले पर दायर याचिका पर केवल बंगाल और केन्द्र सरकार को नोटिस भर दिया है। मामले की अगली सुनवाई पर ही पता चलेगा कि उन लुटे-पिटे, अभागे लोगों को कोई राहत मिल पाती है या नहीं, जिन्हें तृणमूल कांग्रेस के गुंडों ने इस कारण मारा-पीटा, लूटा-खदेड़ा, क्योंकि उन्होंने कथित तौर पर भाजपा को वोट दिया। भाजपा समर्थकों को मारने-पीटने, उनके घर जलाने और उनकी महिलाओं से छेड़छाड़ करने का सिलसिला चुनाव परिणाम आने वाले दिन तभी शुरु हो गया था, जब यह साफ हो गया था कि तृणमूल कांग्रेस फिर सत्ता में आने जा रही है।

तृणमूल कांग्रेस प्रायोजित इस हिंसा के दौरान बंगाल पुलिस ने ऐसे व्यवहार किया, जैसे वह अस्तित्व में ही नहीं है। वह तृणमूल कार्यकर्ताओं की खुली-नग्न गुण्डागर्दी के समक्ष मूक दर्शक बनी रही। इसी कारण उसकी मौजूदगी में हिंसा और लूट का नंगा नाच हुआ। कोई भी यह समझ सकता है कि ऐसा ऊपर से मिले निर्देशों के तहत ही हुआ होगा। यह भी समझा जा सकता है कि कम से कम ऐसे निर्देश चुनाव आयोग ने तो नहीं ही दिये होंगे। फिर किसने दिये होंगे? इससे जानने-समझने के लिये दिमाग लगाने की जरूरत नहीं। इसलिये और नहीं, क्योंकि जब तृणमूल कांग्रेस कार्यकर्ता जिन्ना वाले डायरेक्ट एक्शन डे की याद दिला रहे थे, तब ममता बनर्जी कह रहीं थीं कि बंगाल में कहीं कोई हिंसा नहीं हो रही है। बाद में ममता ने इसकी भी कोशिश की राज्यपाल जगदीप धनखड़ हिंसा पीड़ित लोगों से मिलने न जा सकें। मजबूरी में उन्हें बीएसएफ के हेलीकाप्टर से जाना पड़ा।

राज्यपाल जब हिंसा पीड़ित लोगों के बीच गये तो उन्हें अत्याचार और आतंक की भयावह कहानियों से दो-चार होना पड़ा, लेकिन ममता बनर्जी अपने ही राज्य के लोगों की दारुण दशा देखकर भी नहीं पसीजी। उन्होंने राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री को इस आशय की चिट्ठी अवश्य लिखी कि राज्यपाल को वापस बुलाया जाये। राज्यपाल तो वापस होने से रहे, लेकिन ममता शायद उन लोगों की भी वापसी नहीं चाह रहीं जो तृणमूल कांग्रेस के आतंक भयभीत होकर असम में शरण लेने को बाध्य हुए हैं। ठीक वैसे ही जैसे एक समय कश्मीरी पंडित घाटी में पलायन करने को बाध्य हुए थे। चूंकि ममता बनर्जी यह दिखा रही है कि बंगाल में चहुंओर अमन-चैन है। इसलिये हकीकत जानने के लिये असम के उन शिविरों का रुख करना होगा, जहाँ बंगाल के लोग पलायन करने के बाद शरणार्थियों की तरह रह रहे हैं। इससे बड़ी विडम्बना और कोई नहीं हो सकती कि कोई अपने ही देश में शरणार्थियों की तरह रहने को विवश हो, लेकिन देश की मीडिया का एक बड़ा हिस्सा ऐसी प्रतीति बिल्कुल नहीं करता कि बंगाल में चुनाव बाद बड़े पैमाने पर हिंसा हुई है, और उसके चलते हजारों लोग जान बचाने के लिये बंगाल छोड़कर असम जा पहुँचे हैं। इस पर हैरानी नहीं, क्योंक एक तो असम पलायन करने को विवश हुए लोग किसी भाजपा शासित राज्य में नागरिक नहीं है।

अगर कहीं बंगाल जैसी हिंसा किसी भाजपा शासित राज्य में होती तो आज नहीं, बहुत पहले ही उसकी खबर अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया में भी आ गई होती और अब ऐसे लेख लिखे जा रहे होते कि भारत में फासिस्ट ताकतें किस तरह बेलगाम हो गई हैं? ऐसा नहीं है किसी ने बंगाल की चुनाव बाद हिंसा का संज्ञान नहीं लिया। यह काम कई संस्थाओं ने किया, लेकिन नतीजा ढाक के तीन पात वाला ही रहा, क्योंकि जब कोई राज्य सरकार ही अपने लोगों के जान की दुश्मन बन जाये तो फिर कोई कुछ नहीं कर सकता। शायद अदालतें भी नहीं, क्योंकि कलकत्ता हाईकोर्ट की पांच सदस्यीय बेंच ने यह पाया कि ममता बनर्जी ने मुख्यमंत्री पद संभालने के बाद सब कुछ सहीं कर दिया है। उसने चुनाव बाद हिंसा पर लगाम लगाने के लिये ममता सरकार की तारीफ भी की और इस हिंसा की जांच के लिये विशेष जांच दल का गठन करने की मांग खारिज कर दी। अब यही मांग उस याचिका में की गई है, जिसकी सुनवाई सात जून को होनी है। कायदे से यह याचिका बहुत पहले सुनी जानी चाहिये थी, लेकिन कोई नहीं जानता कि देर क्यों हो गई? यह देरी इसलिये क्षोभ का विषय

है, क्योंकि हमारी अदालतें शाम-देर शाम और यहाँ तक कि रात को भी कुछ मामले सुन लेती है। चंद दिन पहले ही दिल्ली हाईकोर्ट में कालाबाजारी-जमाखोरी के आरोपित नवनीत कालरा के जमानत के मामले में सुनवाई शाम को हुई।

कोर्ट नहीं जानता कि सुप्रीम कोर्ट बंगाल की भीषण राजनीतिक हिंसा पर सुनवाई करते समय किस नतीजे पर पहुँचेगा, लेकिन यह सभी को जानना चाहिये कि इस हिंसा में 23 लोग मारे गये हैं। चार महिलाओं से दुष्कर्म हुआ है। 39 महिलाओं को दुष्कर्म की धमकियां दी गई है। 2157 लोगों पर हमला किया गया। 692 लोगों को हत्या की धमकी दी गयी। 3886 लोगों की सम्पत्ति नष्ट की गई। 6778 लोग अपने गांव-घर से पलायन करने के बाद असम के 191 शिविरों में शरणार्थी के रूप में रहने को विवश हैं। यह आंकड़ा उस ज्ञापन में दर्ज है, जिसे सचेतन नागरिक मंच नामक संगठन ने राष्ट्रपति को दिया है। अगर यह विवरण सत्य है तो यह राष्ट्र के माथे पर कलंक है और

हिंसा पीड़ितों से मिल भावुक हुये राज्यपाल

इसके लिये बंगाल से लेकर दिल्ली में उच्च पदों पर बैठे सभी लोग जिम्मेदार हैं, क्योंकि कोई कुछ नहीं कर पा रहा है।

लेखक दैनिक जागरण में एसोसिएट एडीटर हैं।

बंगाल में हिंसा पीड़ितों को न्याय के लिए उठी मांग

प्रबुद्ध नागरिकों ने बंगाल में हिंसा पर राष्ट्रपति को पत्र भेजा

पश्चिम बंगाल में विधानसभा चुनाव के बाद की हिंसा को लेकर नागरिकों के एक संगठन ने राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद का दरवाजा खटखटाया है।

पूर्व राजदूत भास्वती मुखर्जी व महाराष्ट्र के पूर्व पुलिस महानिदेशक प्रवीण दीक्षित ने राष्ट्रपति को भेजे पत्र में मौजूदा हालातों का संज्ञान लेते हुए हस्ताक्षेप की मांग की है। पत्र में सीमावर्ती राज्य में राष्ट्र विरोधी तत्वों का हाथ होने की आशंका जताते हुए सारी घटनाओं की जांच एनआईए से कराने की मांग की गई है। भास्वती मुखर्जी और प्रवीण दीक्षित ने अपने पत्र में कहा है कि देश के नागरिकों के इस संगठन में पूर्व न्यायाधीश, पूर्व सिविल व पुलिस सेवा के अधिकारी, पूर्व राजदूत, पूर्व सैन्य अधिकारी भी शामिल हैं। ये सभी पश्चिम बंगाल में चुनाव बाद की घटनाओं को लेकर बहुत चिंतित हैं।

राष्ट्रीय महिला आयोग ने बंगाल के डीजीपी को भेजा नोटिस

राष्ट्रीय महिला आयोग ने बंगाल में महिलाओं के खिलाफ हो रही हिंसा पर स्वत संज्ञान लेते हुए राज्य के डीजीपी को नोटिस भेजा है और उन्हें 31 मई को दोपहर 12:30 बजे हाजिर होने का निर्देश दिया है। महिला आयोग की तरफ से जिला स्तर पर महिलाओं के खिलाफ हुए अपराधों के बाद दायर एफआईआर और कार्रवाई की भी रिपोर्ट मांगी गई है। बता दें कि बंगाल में विधानसभा चुनाव परिणाम घोषित होने के बाद महिलाओं के खिलाफ हिंसा के मद्देनजर राष्ट्रीय महिला आयोग के जांच दल ने राज्य का दौरा किया था और दौरे के बाद सिलसिलेवार ढंग से जांच रिपोर्ट में स्थितियों का खुलासा किया था।

राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग ने भी डीजीपी को बच्चों के खिलाफ हिंसा के मामले में नोटिस जारी किया है।

हिंसा पीड़ितों के सहयोग को आगे आये हिन्दू समाजः विहिप

विश्व हिन्दू परिषद् के केन्द्रीय महामंत्री मिलिंद परांडे ने कहा कि दुर्भाग्य से पश्चिमी बंगाल में दो मई से प्रारम्भ हुई क्रूर व वीभत्स राजनैतिक हिंसा का शिकार राज्य का हिन्दू समाज आज तक हो रहा है। 3500 से अधिक गाँव तथा 40 हजार से अधिक हिन्दू, जिनमें बड़ी मात्रा में हमारा अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति का समाज भी सम्मिलित है, हिंसा से बुरी तरह से प्रभावित है।

अपने ही राज्य में शरणार्थी जैसा अपमानजनक जीवन जीने को विवश हिन्दू समाज के भोजन व अन्य सेवा कार्यों में विहिप व अन्य संगठन लगे हुए ही हैं। किन्तु, यह एक बहुत बड़ा कार्य है, जिसके लिये हम सम्पूर्ण हिन्दू समाज से आवाहन करते हैं कि आपदा में पीड़ित बन्धु-भगिनियों के सहयोग के लिये आगे आये।

राष्ट्र को बचाने के लिए समाज एकजुट होकर शक्तिशाली बने

नरेन्द्र सहगल

हिन्दू सम्राट छत्रपति शिवाजी महाराज ने ज्येष्ठ शुक्ल, त्रयोदशी (सन् 1674) के दिन हिन्दुपद पादशाही की स्थापना करके सारे संसार में रणभेरी बजा दी – भारत हिन्दू राष्ट्र था, है और रहेगा। भीषणतम एवं विपरीत परिस्थितियों में हिन्दू समाज जीवित रहेगा। भारत का राष्ट्र जीवन विजय का उपासक है, पराजय का नहीं।

वह समय ऐसा था, जब चारों ओर घोर निराशा का अंधकार व्याप्त था। हिन्दुत्व विरोधी मुगलिया आतंकवाद अपनी चरम सीमा पर था। मंदिर तोड़े जा रहे थे, विद्या के केन्द्र जलाए जा रहे थे, तलवार के जोर पर धर्मान्तरण किया जा रहा था, हिन्दुओं पर जजिया टैक्स लगाकर अमानवीय उत्पीड़न किया जा रहा था। पूर्णतया मरणासन्न की स्थिति में पहुँच चुका था हिन्दू समाज। ऐसी घोर विकट एवं निराशाजनक परिस्थितियों में शिवाजी द्वारा हिन्दुपद पादशाही की घोषणा करके भगवा ध्वज को लहराने का कार्य भारत के गौरवशाली इतिहास का एक और स्वर्णिम अध्याय बन गया।

अपने पौरूष, सैन्य रणकौशल और सामरिक बुद्धिमता के आधार पर छत्रपति शिवाजी ने हिन्दू समाज में राष्ट्रीयता की एक ऐसी दिव्य चेतना जागृत कर दी, जिसके परिणामस्वरूप औरंगजेब जैसे अत्याचारी मुगल सम्राट के सिंहासन की भी चूलें हिल गईं। अतीत में राष्ट्रनायक श्रीराम द्वारा राक्षसों का संहार करके रामराज्य की स्थापना और योगेश्वर श्रीकृष्ण द्वारा अधर्मियों का विनाश करके धर्म की स्थापना जैसा ही यह ऐतिहासिक प्रसंग था, शिवाजी का हिन्दू सम्राट के नाते राज्यभिषेक।

हिन्दू सम्राट छत्रपति शिवाजी ने भारत की सुप्त हो रही वीरव्रती रण परम्परा और क्षीण होते जा रहे राष्ट्रीय स्वाभिमान को पुनः जागृत करने में अद्भुत सफलता प्राप्त की थी। अतीत काल में भी सम्राट चन्द्रगुप्त, अशोक, पुष्यमित्र, समुद्रगुप्त, हर्ष, ललितादित्य, अवंतिवर्मन, कृष्णदेव राय और रणजीत सिंह और गुलाब सिंह जैसे शूरवीर हिन्दू सम्राटों ने विशाल साम्राज्यों की स्थापना की थी। भारतीयों के इसी गौरवशाली इतिहास को कुटिल अंग्रेजों ने मिटाने का भरसक प्रयास किया। इस वीरव्रती इतिहास का पुनर्लेखन प्रारम्भ हो चुका है।

छत्रपति शिवाजी द्वारा सफलतापूर्वक स्थापित हिन्दवी स्वराज्य की पृष्ठभूमि को समझने के लिए शिवाजी के समस्त जीवन को समझना भी जरूरी हो जाता है। शिवाजी के पिता शाहजी भोंसले तो जीवन भर मुगलिया दरबारों की चाकरी करते रहे। परन्तु शिवाजी की माता जीजाबाई ने अपने पुत्र को रामायण, महाभारत एवं सनातन भारत की विजयी गाथाएं सुना कर एक वीरव्रती हिन्दू योद्धा बना दिया।

इतिहास साक्षी है कि राष्ट्रमाता जीजाबाई का परिश्रम सफल हुआ और शिवाजी ने बालपन से ही अपनी तलवार के जौहर और अद्भुत रणकौशल का परिचय देना प्रारम्भ कर दिया। मात्र 17 वर्ष की आयु में शिवाजी ने अपनी बाल सेना के साथ तोरण नामक किले पर शत्रु को पराजित करके भगवा ध्वज फहरा दिया। इसके बाद उन्होंने जीवन के अंतिम क्षण तक सैकड़ों युद्ध किए और जीते। वे एक ऐसे सेनापति थे, जिन्होंने अपने समस्त जीवन में एक भी युद्ध नहीं हारा।

एक बार शिवाजी के पिता शाहजी भौंसले बाल शिवा को मुगलिया दरबार में ले गए। पिता की इच्छा के विरुद्ध बाल शिवा ने दरबार की परम्परा के अनुसार अपना सिर नहीं झुकाया।

इस बाल सैनिक ने स्पष्ट कहा कि 'विदेशी विधर्मी और हिन्दुओं का संहार करने वाले को मैं अपना राजा नहीं मानता।' बाल शिवाजी के इस 'राजद्रोही' व्यवहार के बाद जब दरबारी मुगल सैनिक ने इस बालक का सिर काटने का प्रयास किया तो शाह जी भौंसले ने किसी प्रकार बचा लिया।

शिवाजी किस चातुर्य से औरंगजेब की कैद से छूट कर आ गए इस कथा को सभी जानते हैं। वापस आकर शिवाजी ने हिन्दू साम्राज्य की स्थापना के लिए अपनी सैनिक गतिविधियों को युद्ध स्तर पर तेज कर दिया। मुगलिया सेनापति दुर्दान्त अफजल शाह और उसकी समस्त सेना का संहार करने वाले शिवाजी ने इस सातफुटे मुगल सेनापति का सर काट कर अपनी माता जीजाबाई के चरणों में पटक दिया था। इस घटना की सूचना जब दिल्ली सम्राट औरंगजेब तक पहुंची तो उसके पांव के नीचे की धरती हिल गई।

इस तरह एक के बाद एक युद्ध को जीतते चले गए थे शिवा जी महाराज। इन सफलताओं ने शिवा जी को एक सफल हिन्दू सम्राट के रूप में प्रस्तुत कर दिया। विजय के इन क्षणों में शिवा जी ने अपने 'हिन्दू चरित्र' पर कभी आंच नहीं आने दी। एक ऐसे ही युद्ध के पश्चात जब इनके सैनिकों ने एक पराजित मुगलिया शासक की युवा बेटी को उपहार के रूप में शिवाजी के सामने प्रस्तुत किया तो शिवा जी ने उस युवती से कहा 'अगर मेरी मां भी इतनी सुंदर होती तो मैं भी इतना ही सुंदर होता।' शिवाजी ने मुस्लिम महिला को भी माता का सम्मान देकर वापस उसके घर भिजवा दिया।

शिवाजी ने तलवार के जोर पर धर्मान्तरित हो चुके हिन्दुओं को वापस हिन्दू धर्म में लाने का अभियान भी छेड़ दिया। अपने घर में वापस लौटने वाले एक सैनिक कुली खान ने जब हिन्दू धर्म को स्वीकार किया तो शिवाजी ने अपनी पुत्री का विवाह इसके साथ करके एक अतुलनीय उदाहरण प्रस्तुत किया। इस तरह से धर्मान्तरित मुसलमान फिर से हिन्दू धर्म में वापस लौटने लगे। शिवाजी की इन सफलताओं के पीछे उनके कुलगुरू कोणदेव और समर्थ रामदास के मार्गदर्शन एवं शिक्षा का भी गहरा स्थान है।

'स्वयंमेव मृगेन्द्रता' शेर अपनी शक्ति के बल पर जंगल में राज करता है। दादा कोणदेव, समर्थ रामदास, माता जीजाबाई और प्रजा ने इस अभिजात हिन्दू सम्राट को पहचाना और राज्याभिषेक कर दिया।

भारत के एक हिस्से में स्थापित इस हिन्दवी साम्राज्य की बागडोर सम्भालते ही छत्रपति शिवाजी ने हिन्दुओं के पुर्नुत्थान का विजयी अभियान प्रारम्भ करके दिल्ली की मुगलिया सल्तनत को चुनौति भी दे दी।

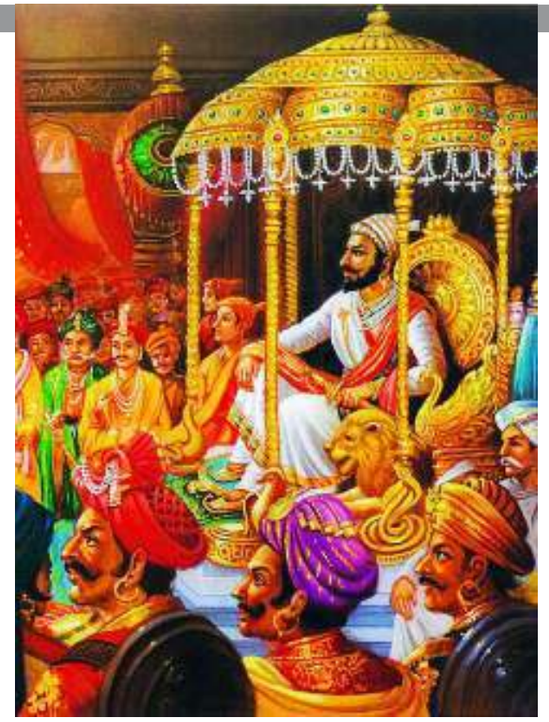

शिवाजी के राज्य में संस्कृत एवं मराठी भाषाओं को पुनर्जीवित किया गया। फारसी भाषा को तिलांजलि देकर मराठी को राजभाषा बना दिया गया। टूटे मंदिरों के निर्माण से लेकर बहन-बेटियों के सम्मान की व्यवस्थाएं भी की गईं।

राज्य की सुरक्षा के लिए सैनिकों की संख्या दो हजार से बढ़ाकर दो लाख तक कर दी गईं। कोंकण और गोवा जैसे समुद्री तटों की रक्षा के लिए सरदार आंगरे के नेतृत्व में एक विशाल समुद्री बेड़े (नौसेना) का निर्माण किया। इस सारे कालखण्ड में शिवाजी ने गुरिल्ला युद्ध की तकनीक का आविष्कार करके अपने राज्य को बनाने एवं सुरक्षित करने के सभी उपाय किये।

इसीलिए राष्ट्रीय स्वाभिमान की विजय के प्रतीक हिन्दू साम्राज्य दिवस को समस्त भारतवासी विशेषतः विशाल हिन्दू समाज एक राष्ट्रीय उत्सव की तरह मनाता है।

वर्तमान में विधर्मी तहज़ीब को भारत में सुरक्षित रखने के लिए विधर्मी लोग भारत की सनातन संस्कृति पर तरह-तरह के आघात कर रहे हैं, अतः आवश्यकता इस बात की है कि समस्त हिन्दू समाज अपने राष्ट्र को बचाने के लिए एकजुट होकर शक्तिशाली बने।

नया संसद भवन बनाम काँग्रेस की जागीर!

- युवराज पल्लव

भारत के संसद भवन का निर्माण 100 वर्ष पूर्व अंग्रेजों द्वारा कराया गया था । मोदी सरकार ने भविष्य की जरूरतों और आने वाली मुश्किलों को ध्यान में रखते हुए रायसीना हिल इलाके में नया संसद भवन बनाने की शुरुआत की है ।इस परियोजना को ही सेंट्रल विस्टा प्रोजेक्ट कहा जाता है। अत्यधिक पुराना होने के कारण अब यह संसद भवन जर्जर हालत में है। इसीलिए 2012 में लोकसभा स्पीकर मीरा कुमार ने नए संसद भवन के निर्माण के लिए सरकार को लिखा था।

आज मोदी का राजमहल कह कर जिस महत्वाकांक्षी परियोजना को बदनाम किया जा रहा है वह सिर्फ प्रधानमंत्री आवास तक सीमित नहीं है। इसके तहत नई बड़ी संसद, मंत्रियों के कार्यालय, आवास, सचिवालय आदि बनाये जाने हैं। यह सब मात्र 3 किमी के दायरे में होंगे। जो एक सुरंग से एक-दूसरे से जुड़े होंगे। जिससे न केवल कार्य कुशलता और उत्पादकता बढ़ेगी, बल्कि समय और धन की भी बहुत बचत होगी। यह सब 84वें संविधान संशोधन 2001 को ध्यान में रख कर किया जा रहा है। जिसके तहत वर्ष 2026 के बाद नए परिसीमन हो सकेंगे। ताकि बढ़ती जनसंख्या के बेहतर भविष्य के लिए, बेहतर प्रतिनिधित्व मिल सके। राजमहल वह होता है, जहां से राजा या महारानी अपना सारा राज-काज चलाती है। अपने घर से सत्ता का संचालन करना गांधी परिवार की परम्परा रही है। यही कारण है मनमोहन सिंह के प्रधानमंत्री काल में सोनिया गांधी ने ग़ैर संवैधानिक 'राष्ट्रीय सलाहकार समिति' बना कर प्रधानमंत्री पद को छोटा करने का प्रयास किया।

1989 से पहले तक भारत के प्रधानमंत्री जिस जगह से देश का शासन संभालते थे वह उनका घर होता था। 1989 में जब वी पी सिंह देश के प्रधानमंत्री बने तो उन्होंने 7 रेस कोर्स को प्रधानमंत्री का आधिकारिक आवास घोषित किया। तब से अब तक 7 रेस कोर्स प्रधानमंत्री का अधिकारिक आवास है। जिसका नाम अब प्रधानमंत्री मोदी ने प्रधानमंत्री पद के लोक कल्याणकारी दायित्वों व कर्तव्यों के अनुरूप '7 लोक कल्याण मार्ग' कर दिया है।

पं नेहरू अपने घर तीन मूर्ति भवन से देश पर शासन करते थे। जो उनकी मृत्यु के पश्चात नेहरू संग्रहालय व स्मारक में बदल गया। दूसरे प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जिस 10 जनपथ से कामकाज करते थे वह उनकी मृत्यु के पश्चात उनके स्मारक व संग्रहालय में बदल गया। लेकिन शास्त्री जी का गांधी परिवार से बाहर के होने के कारण कोंग्रेस को यह भी पसंद नहीं आया और इसे कोंग्रेस ने अपना कार्यालय बना दिया। पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की हत्या के बाद सोनिया गांधी ने इसे अपना निजी आवास बना लिया। साथ ही इसे जीवन पर्यंत अपने लिए आरक्षित भी कर लिया। यह आवास प्रधानमंत्री आवास से बहुत बड़ा और आलीशान है। इसी प्रकार इंदिरा गांधी के आवास को उनकी मृत्योपरांत उनके स्मारक व संग्रहालय में बदल डाला गया। लेकिन तत्कालीन समय में कोई इनसे यह पूछने की हिम्मत नहीं जुटा सका कि आखिर एक के बाद एक सरकारी आवासों को गांधी परिवार का स्मारक, संग्रहालय और निजी आवास क्यों बनाया जा रहा है?

वास्तविकता यह है कि भारत से जागीरदारी समाप्त हुए भले वर्षों हो गए हों। लेकिन अभी भी बहुत से नेताओं के दिमाग से जागीरदारी मानसिकता समाप्त नहीं हुई है। वे सरकारी संपत्ति को अपनी निजी जागीर के तौर पर इस्तेमाल से चूकते नहीं हैं। वरना क्या कारण है कि सोनिया गांधी ने देश के दूसरे प्रधानमंत्री के आवास को अपना निजी आवास बना लिया है? जबकि वे न कभी प्रधानमंत्री रहीं न ही मंत्री। सेंट्रल विस्टा पुनर्निर्माण के तहत बनने वाले आवास प्रधानमंत्री व अन्य मंत्रियों की प्रतिष्ठा के अनुरूप होंगे। शायद यही कारण है कोंग्रेस नेताओं को यह बर्दाश्त नहीं कि किसी अन्य नेता का आवास सोनिया गांधी के महलनुमा घर से बेहतर हो?

हे बयानवीरों! इतिहास माफ नहीं करेगा

- अनिल निगम

आज संपूर्ण भारत कोरोना वायरस के चलते भयावह संकट से जूझ रहा है। हजारों परिवार इससे बरबाद हो चुके हैं और लाखों लोगों के सिर पर अब भी खतरा मंडरा रहा है। लगातार लोग कोरोना से जंग हार कर मौत की आगोश में जा रहे हैं,लेकिन आज भी अनेक नेता अपनी सियासी रोटी सेंकने से बाज नहीं आ रहे हैं। वास्तविकता तो यह है कि इस भयावह संकट के दौर में नेताओं से यह आशा की जाती है कि वे परस्पर मतभेद भुलाकर मानवसेवा पर अपना ध्यान केंद्रित करें। अफसोस कि नेता अपनी जुबानी जंग से देश की जनता को भ्रमित करने के काम में जुटे हुए हैं।

नेताओं के इन बयानों का जनता और देश की दशा और दिशा पर क्या प्रभाव पड़ता है? इसका विश्लेषण करने के पहले इस बात को समझना जरूरी है कि कौन से ऐसे बयान हैं, जिन्होंने प्रतिकूल प्रभाव डाला है।

उत्तर प्रदेश और बिहार में नदियों में बहाए गए शवों के बारे में राहुल गांधी ने ट्वीट किया कि गंगा मां की रेत से दिखता हर शव का कपड़ा कहता है कि उस रेत में सिर दफनाए मोदी सिस्टम रहता है। उनकी इस टिपपणी से ऐसा लगता है कि इस सबके लिए देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ही जिम्मेदार हैं। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने हाल ही में बयान दिया कि कोरोना वायरस का जो सिंगापुर में नया वैरिएंट मिला है, वह बच्चों के लिए अत्यंत खतरनाक है। यह वैरिएंट भारत में तीसरी लहर के रूप में आ सकता है। इसलिए भारत को सिंगापुर की हवाई यात्राएं अविलंब बंद कर देनी चाहिए। केजरीवाल के इस बयान को सिंगापुर ने बेहद गंभीरता से लिया और भारत के उच्चायुक्त को बुलाकर इस पर पर कड़ा प्रतिरोध भी दर्ज कराया।

इसके पहले देश भर में ऑक्सीजन की कमी पर भी खूब बयानबाजी हुई। कांग्रेस नेता व सांसद राहुल गांधी ने कई ट्वीट कर केंद्र की नरेन्द्र मोदी सरकार पर अस्पतालों में ऑक्सीजन की कमी के लिए निशाना साधते हुए कहा, इस भयावह दौर में चुप्पी साधने के लिए केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार को धन्यवाद। राहुल गांधी के इसी बयान पर केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने पलटवार किया। उन्होंने अपने ट्वीट में कहा कि देश में ऑक्सीजन की न कमी है ना होगी, परेशान सिर्फ गिद्ध वाली दूषित राजनीति करने वालों से है। इसी तरह से बिहार में पूर्व मुख्यमंत्री लालू यादव और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने भी एक दूसरे पर जमकर कीचड़ उछाला।

दिलचस्प यह है कोरोना वैक्सीन की कमी का रोना रोने वाले अनेक नेताओं ने वैक्सीन की उपयोगिता और विश्वसनीयता पर सवाल उठाए थे। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष और यूपी के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने वैक्सीन को बीजेपी की वैक्सीन तक कह दिया था। उन्होंने कहा कि 'मैं तो नहीं लगवाऊंगा भाजपा की वैक्सीन।' पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी सहित अनेक नेताओं ने इस पर कई सवाल दागे थे। इस संबंध में भारत बॉयोटेक के डॉ. कृष्णा एल्ला को कहना पड़ा था कि हमने अपना काम ईमानदारी से किया है लेकिन कोई हमारी वैक्सीन को पानी कहे तो बिल्कुल मंजूर नहीं होगा। हम भी वैज्ञानिक हैं, जिन्होंने अपना काम किया है। कुछ लोगों के जरिए वैक्सीन का राजनीतिकरण किया जा रहा है।

विपक्षी नेता भूल गए कि वे कोरोना वैक्सीन और सर्जिकल स्ट्राइक का विरोध करके सरकार का नहीं, बल्कि देश के वैज्ञानिकों और सैनिकों का अपमान कर रहे हैं। बिना शोध अथवा अनुसंधान के केजरीवाल का सिंगापुर के नए वैरिएंट का बखेड़ा खड़ा करना, नदी में प्रशासन द्वारा शवों को बहाने अथवा ऑक्सीजन के बारे में अनर्गल बयानबाजी से देश के लोगों में भय और अविश्वास का माहौल पैदा हो रहा है।

आज देश जिस तरह से संकट के दौर से गुजर रहा है, उसके लिए राजनैतिक दलों को इन मुद्दों पर सियासी रोटियां सेंकने से बाज आना चाहिए।

'वसुधैव कुटम्बकम' के विरुद्ध

चीन की चाल ?

परमवीर

हाल ही में चीन ने भारत के विरुद्ध एक षड्यंत्र रचा और इसका भारत के ही लोगों ने जाने अनजाने में सहयोग और समर्थन कर दिया। आमजन यह समझ ही नहीं पाया को देश को बदनाम करने के पीछे कौन लोग है। यह समय युद्धकाल जैसा है । इस समय एकजुटता से कोविड से लड़ने की योजना होनी चाहिए थी। आइए समझते है कैसे यह षड्यंत्र चला?

गंगा किनारे दफनाए शवों का सच?

अभी गंगा किनारे दफनाए गए शवों की तस्वीरें बहुत वायरल हुई। इन तस्वीरों को ध्यान से देखने पर पुल के ऊपर चलती हुई ट्रेन दिखाई दे रही है। इसी से इन तस्वीरों पर शक हो जाता है। लॉकडाउन में ट्रेन कैसे चल रही है? छानबीन करने पर एक फोटोग्राफर 'मनोज कनौजिया' सामने आते हैं। उन्होंने बताया कि यह तस्वीर उन्होंने 2018 में ली थी अर्थात यह पुरानी तस्वीरें हैं। पुरानी तस्वीरों के साथ अनेक नई तस्वीरों को मिश्रित कर षड्यंत्र के अंतर्गत एक एजेंडा पर काम करने वाले लोग बहुत सक्रिय हो गये।

क्या था षड्यंत्र का लक्ष्य?

लक्ष्य था भारत को वैक्सीन डिप्लोमेसी से रोकना जिसके माध्यम से भारत को यूएन सिक्योरिटी काउंसिल में जाने से रोका जा सके वैसे जानकारी के लिए बता दें कि भारत के कारण ही टीम को यूएन सिक्योरिटी काउंसिल में स्थान मिला था किन्तु चीन निरन्तर भारत को बाहर रखने के लिए जब तक वीटो का प्रयोग करता रहा है।

20 जनवरी 21 को फ्रांस में एक खबर छपी थी कि भारत 'फार्मेसी ऑफ वर्ल्ड' बनता जा रहा है। भारत ने विश्व को प्रथम वैक्सीन निर्यात की। जिस दिन यह खबर छपी थी उस दिन भारत कोविड-19 मरीजों की संख्या न्यूनतम थी। भारत कोविड-19 नियंत्रण कर चुका था। भारत को कोविड-19 से कोई खास फर्क नहीं पड़ा था और मार्च तक भारत की वैक्सीन विश्व के 70 से अधिक देशों में जाने लगी थी।

भारत की वैक्सीन डिप्लोमेसी वसुधैव कुटुम्बकम

वैक्सीन डिप्लोमेसी के अंतर्गत भारत जिन 70 देशों में यह वैक्सीन भेज रहा था वह सभी यूएन सिक्योरिटी काउंसिल के लिए भारत के पक्ष में वोट देते, भारत को समर्थन करते तो भारत यूएन सिक्योरिटी काउंसिल में स्थाई सदस्य के रूप में निश्चित तौर से पहुंच जाता। किन्तु चीनी ऐसे कैसे हो जाने देता? इसीलिए चीन ने एक साजिश के तहत दुष्प्रचार प्रारंभ किया। इसी साजिश के तहत भारत में बैठे लोग भी उसका टूलकिट बन गए।

अचानक से देश में गंगा में बहती हुई लाशों की तस्वीरों की बाढ़ सी आ जाती है। यह भ्रम फैलाया जाता है कि कोविड-19 से बहुत मौतें हो रही है। इसलिए दाह संस्कार के लिए लकड़ियाँ समाप्त हो गई है। इसलिए लोग लाशों को गंगा में बहा रहे है। किंतु यह सत्य नहीं था। भारत में दाह संस्कार के लिए उपले भी उपयोग में लिए जाते हैं और प्रत्येक गांव, घर में उपलों की उपलब्धता थी। हिंदुओ की अनेक जातियों में दफनाने का प्रचलन है, जल दाह का भी प्रचलन रहा है। किंतु एक दुष्प्रचार जो षड्यंत्र के रूप में किया गया वह सफल होता हुआ दिखाई दिया। अंतरराष्ट्रीय मीडिया कभी लाश के फोटो वीडियो या चिता के फोटो नहीं दिखाता, लेकिन अब दिखाने लग जाता है।

इन तस्वीरों को ध्यान से देखने पर अनेक तस्वीरें साफ साफ तौर पर पुरानी दिखाई देती है। जिनमें व्यक्तियों के मास्क तक नहीं लगे हैं। एक काल्पनिक अधिकारी मुकेश कुमार सिंह के पत्र का हवाला देकर चीनी मीडिया अपप्रचार करता है कि गंगा में बहाए गए सभी शव कोविड-19 से मृत लोगों के हैं। लेकिन इसका कोई सबूत नहीं दिया जाता है। आप नेट पर सर्च करेंगे तो पाएंगे कि 2013 की कुछ फोटो आपको ऐसी मिल जाएगी जिसमें मात्र 50रु. लेकर लोग गंगा में लाश को ठिकाने लगाते थे और इस काम में बाकायदा कांस्टेबल भी सहयोग करते थे। उस समय यूपी में समाजवादी पार्टी की सत्ता थी।

अंग्रेजों द्वारा भारतीय शिक्षा प्रणाली का सर्वेक्षण

प्रशांत पोळ

अंग्रेज़ जब भारत में हुकूमत करने की स्थिति में आये, तो उन्होंने सबसे पहले, भारत की शिक्षा प्रणाली का सर्वेक्षण किया। सर्वेक्षण की रिपोर्ट इंग्लैण्ड, स्कॉटलैंड और कुछ अंशों में भारत में भी उपलब्ध हैं। ये सारी रिपोर्ट सनसनीखेज हैं। हमारी सारी मान्यताओं को और हमे आज तक पढ़ाए गए इतिहास को झुठलाने वाली ये सब रिपोर्ट्स हैं।

सन 1757 में प्लासी का युद्ध जीतने के बाद, ईस्ट इंडिया कम्पनी का बंगाल पर कब्जा हो गया। जब उन्होंने अपना प्रशासन तन्त्र अमल में लाने का प्रयास किया, तो उन्हें पता चला की पूरे बंगाल में, कर वसूली लायक भू-भाग में से, 34 प्रतिशत जमीन से कोई कर वसूली नहीं होती हैं। इस का कारण हैं, की ये सारी जमीन पाठशालाओं के लिए हैं। इसको देखते हुए अंग्रेजों ने (अर्थात ईस्ट इंडिया कम्पनी के अधिकारियों ने), उनका शासन जहाँ था, ऐसे क्षेत्रों में शिक्षा का सर्वेक्षण करने की योजना बनाई।

वर्ष 1818 में अंग्रेजों ने मराठों को परास्त कर, अखण्ड भारत के बड़े से भूभाग पर अपना नियन्त्रण कर लिया था। अब उनकी प्राथमिकता थी, शासन चलाना। शिक्षा पद्धति यह शासन व्यवस्था का ही एक अंग था। उन दिनों मद्रास प्रेसीडेंसी में गवर्नर जनरल के पद पर मेजर जनरल सर थॉमस मुनरो आसीन थे। इन्होंने 25 जून 1822 को एक आदेश निकाला, जिसके तहत मद्रास प्रेसीडेंसी के सभी कलेक्टर्स को कहा गया था कि वे गाँवों की पाठशालाओं के बारे में जानकारी इकठ्ठा कर भेजे।

थॉमस मुनरो (Sir Thomas Munro : 27 मई 1761 6 जुलाई 1827) यह स्कॉटिश योद्धा थे और ईस्ट इंडिया कम्पनी में तरक्की पा कर मेजर जनरल के पद पर पहुंचे थे। 10 जून 1820 से लेकर तो 10 जुलाई 1827 तक यह मद्रास प्रेसीडेंसी के गवर्नर जनरल रहे। ईस्ट इंडिया कम्पनी और अंग्रेजी हुकूमत के प्रति अत्यधिक समर्पित, थॉमस मुनरो, भारतीयों को दी जाने वाली शिक्षा के प्रति सजग थे। इसलिए उनके कलेक्टर्स ने भेजे हुए रिपोर्ट्स का अध्ययन करने उन्हें चार वर्ष लगे। 10 मार्च 1826 को उन्होने इस सर्वेक्षण की रिपोर्ट को जारी किया। इसका शीर्षक था : 'The early measures for education in the Madras Presidency – Sir Thomas Munro's minutes on education in 1822 and 1826' इस रिपोर्ट में जनरल मुनरो के शब्द हैं – 'प्रेसीडेंसी के सभी गावों में पाठशालाएं हैं'। (Every village has a school)। इस रिपोर्ट के सातवे अध्याय (Chapter) में जनरल मुनरो लिखते हैं, 'State of native education here exhibited, low as it is compared with trhat of our own country, it is higher than it was in most European countries at no very distant period'. अर्थात 'मद्रास प्रेसीडेंसी में शिक्षा का स्तर अपने देश (इंग्लैण्ड) से कम हैं, किन्तु लगभग सभी यूरोपियन देशों से अच्छा हैं'। जनरल मुनरो, इंग्लैण्ड के शिक्षा के स्तर को कम कैसे बोल सकते थे? किन्तु बाकी लोगों ने क्या कहा ? अनेक समकालीन ब्रिटिश अधिकारियों और ईसाई मिशनरियों ने यह लिखकर रखा हैं की भारतीय शिक्षा व्यवस्था, इंग्लैण्ड की शिक्षा प्रणाली से अच्छी हैं।

इसी मद्रास की रिपोर्ट में लिखा हैं, '(मद्रास) प्रेसीडेंसी में 12,498 पाठशालाएं हैं, जिन मे 1,88,650 विद्यार्थी पढ़ते हैं'।

जनरल मुनरो मद्रास में जब शिक्षा पद्धति के सर्वेक्षण का आदेश दे रहे थे, लगभग उसी समय बॉम्बे प्रेसीडेंसी के गवर्नर, माउंटस्टुअर्ट एलफिंस्टन (1819 से 1827 के बीच बॉम्बे के गवर्नर रहे) ने भी इसी प्रकार के आदेश कमिशनर ऑफ डेक्कन को तथा गुजरात और कोंकण के कलेक्टर्स को दिये। 10 मार्च 1824 का, Government of Bombay का, गांवों की संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था के बारे में जानकारी देने का पत्र हैं। एलफिन्स्टन ने इसके लिए जो कमिटी बनाई, उसमे जी एल प्रेण्डरगास्ट का समावेश, 'बॉम्बे गवर्नर काउंसिल' के सदस्य के रूप **(शेष पृष्ठ 26 पर)**

निर्गुण भक्ति के कवि
संत कबीरदास

डॉ. कपिल अग्रवाल

सन्त रामानन्द ने जिस भगवत प्रेम और भक्ति के पौधे को उत्तर भारत की भूमि पर अंकुरित किया। उसे सींच कर बड़ा करने का काम अपने जीवन भर संत कबीर करते रहे। 'भक्ति द्रविड़ उपजी लाए रामानन्द, परगट किया कबीर ने सप्त दीप नव खण्ड।'

कहते हैं कबीर का जन्म 1398ई. (ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा) में बनारस में हुआ। एक तालाब के किनारे वीरू नामक जुलाहे को एक नवजात शिशु मिला और उसने ही उसका पालन-पोषण किया। यही बालक आगे चलकर संत कबीर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। कबीर ने छोटी आयु में ही गहरी आध्यात्मिक प्रवृत्ति देखी गयी। संत रामानन्द से रामनाम का गुरुमंत्र लेकर विधिवत दीक्षा ग्रहण कर कबीर उनके शिष्य बन गये। संत रामानन्द ने कबीर को राम-नाम का जाप तथा श्रीराम की आराधना करने का आदेश दिया। गुरु के आदेश का पालन कर जुलाहे का काम करते हुए कबीर राम नाम की माला फेरने लगे। वे नित्य अपने मस्तक पर रामानन्दी तिलक (भौहों के बीच से सीधे मस्तक के ऊपरी सिरे तक) लगाने लगे।

स्वतंत्र विचारों के कबीर ने अपने गुरु रामानन्द के विचारों को समूचा स्वीकार नहीं किया। रामानन्द ने जहाँ साकार राम की उपासना पर बल दिया था। वहीं कबीर ने निराकार ईश्वर की उपासना का पाठ जनता को पढ़ाया। संत कबीर ने ईश्वर की सच्ची भक्ति के लिये हर व्यक्ति को सामाजिक-कुरीतियों से बचने का उपदेश दिया। ऊँच-नीच के भेदभाव को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिये समाज में फैली बुराईयों और पाखण्डों का वे आजीवन खण्डन करते रहे। कबीर की मान्यता थी कि परम पिता परमेश्वर हर प्राणी के अन्दर विराजमान है। इसलिये मूर्तिपूजा व्यर्थ है। उन्होंने मूर्ति पूजा का खण्डन करते हुए कहा- पत्थर पूजे हरि मिले, तो मै पूजूँ पहाड़।

ताते तो चाकी भली, पीस खाय संसार।।

संत कबीर ने मुसलमानों में व्याप्त कुरीतियों की भी बड़ी तीखी आलोचना की, वे कहते हैं-

कांकर, पाथर जोरि कै, मस्जिद लई बनाये,
ता चारि मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय?

उन्होंने सतगुरु को परमात्मा से भी बढ़कर बताया। भक्ति के मार्ग पर चलने के लिये गुरु की कृपा नितान्त आवश्यक है-

गुरु गोविन्द दोउ खड़े, काके लागूं पाँय?
बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो बताय।।

संत कबीर ने स्वयं कोई ग्रंथ नहीं लिखा। योग और भक्ति के मार्ग पर चलते हुए उन्होंने जो कुछ प्रत्यक्ष अनुभव किया उसी को, सरल शब्दों में व्यक्त कर दिया। इनके पदों और साखियों में कही हुई बातें वेद, उपनिषद, जैन व बौद्ध मत से प्रेरित हैं। उनकी शिक्षाओं को उनके शिष्यों ने बाद में लिखकर प्रकाशित कराया। संत कबीर श्रेष्ठ भक्त और कवि होने के साथ ही उच्चकोटि के योगी भी थे।

श्री गुरु ग्रंथ साहब में संत कबीर के 540 पद सम्मिलित किये गये हैं। यानी कुल वाणी (5871 पद) का लगभग दसवाँ हिस्सा। वास्तव में गुरु अंगद देव और गुरु तेग बहादुर से भी अधिक पद इस ग्रंथ में कबीर के हैं।

कहि कबीर भजु सारगं पानी। राम उदकि मेरी तिखा बुझानी।।
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 323)

कबीर कहते हैं कि जिसके हाथों में धनुष (सारंग) है। उस (राम) को भजो। इस रामरूपी जल ने मेरी प्यास बुझायी है।

राम जपउ जीअ ऐसे ऐसे। ध्रु प्रहिलाद जपिओ हरि जैसे।।

हे जीव! राम को वैसे ही जप जैसे ध्रुव और प्रहलाद ने जपा था। (पृष्ठ 337)

कबीर ने वेदों के प्रति अपना सम्मान इस प्रकार व्यक्त किया है- 'वेद कतेब कहहु मत झूठे, झूठा जो न विचारै'
(श्री गुरुग्रंथ साहब पृष्ठ 1350)

वेद पुस्तक को झूठ मत कहो, झूठा तो वह है जो इन पर विचार नहीं करता।

कबीर की मृत्यु सन् 1518 में 120 वर्ष की आयु में मगहर में हुई।

चामी मुर्मू

महिला टार्जन

महिला सशक्तिकरण एवं समाज कल्याण में महिलाओं की अथक सेवा को पहचान देने के लिये भारत सरकार प्रतिवर्ष नारी शक्ति पुरस्कार प्रदान करती है। प्रतिवर्ष की भांति 8 मार्च 2020 को राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर जिन 15 महिलाओं को नारी शक्ति सम्मान से सम्मानित किया उनमें झारखण्ड की महिला टार्जन-चामी मुर्मू को भी यह सौभाग्य प्राप्त हुआ।

वे वर्ष 1988 से पर्यावरण संरक्षण एवं महिलाओं को सशक्त करने में जुटी हैं जिस दौर में महिलाओं को सामाजिक रूप से कई बेड़ियों में बांधकर रखा जाता था, अकेले चूमने की इजाजत नहीं थी, उस दौर में चामी ने घर की दहलीज लांघी और एक अलग सफर पर चल पड़ीं।

चामी मुर्मू ने गाँव-गाँव में घूमकर महिलाओं को पर्यावरण का महत्व समझाया और बंजर भूमि को हरा-भरा करने में जुट गयी। जहाँ आंगनबाड़ी का केन्द्र नहीं था, वहाँ पर पोषाहार पहुंचाने का काम करती थीं। उन्होंने दो हजार से अधिक महिलाओं का समूह बनाकर उन्हें स्वरोजगार से जोड़ा। 32 वर्ष के अपने सफर में चामी ने 780 हेक्टेयर से अधिक सरकारी, गैर-सरकारी एवं बंजर भूमि पर 27,25,960 पौधे लगा चुकी है।

चामी कोल्हान क्षेत्र में सहयोगी महिला बगराई संस्था के द्वारा 2800 महिलाओं का समूह बना चुकी है। उनको यह संस्था 1992 में पंजीकृत हुई तो वे लम्बे समय तक इसके सचिव पद पर रहीं। परन्तु चामी के लिये यह सब

डॉ. पीयूष लता

इतना आसान नहीं रहा। उन्हें समाज से न जाने कितने ताने सुनने पड़े। कई बाधायें आईं। लेकिन हर मुश्किल और हालात का सामना करते हुए चामी आगे बढ़ती रहीं।

चामी ने महिलाओं को प्रशिक्षण दिलाकर उन्हें स्वरोजगार से जोड़ने का काम किया। राजनगर के विभिन्न बैंकों में आज महिलाओं की अधिक भीड़ देखी जाती है। यह सब चामी के अनवरत संघर्ष और प्रयासों का ही प्रतिफल है। चामी अपनी संस्था की ओर से महिलाओं को बकरी पालन, मुर्गी पालन, शुकर पालन सहित विभिन्न प्रकार की स्वरोजगार योजनाओं का लाभ दिलाकर उनके परिवारों को आर्थिक रूप से सबल बनाने का कार्य कर रही हैं। महिलाओं को सरसों, आलू, गेहूं आदि बीज का वितरण कर उन्हें खेती के लिये प्रेरित करती हैं।

1988 से पर्यावरण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाली जिला परिषद् सदस्य चामी को योगदान के लिये भारत सरकार की ओर 1996 में इंदिरा प्रियदर्शिनी वृक्षमित्र सम्मान से सम्मानित किया जा चुका है। 1999 में सामाजिक समन्वय समिति, चाईबासा द्वारा चाईबासा रत्न, सिंहभूम क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की ओर से अभिनन्दन पत्र, आदिवासी एसोसिएशन के द्वारा सम्मान पत्र, भारतीय जननाट्य संस्था चाईबासा की ओर से सफदर हाशमी सम्मान सहित दर्जनों सम्मान प्राप्त हो चुके हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च 2020 को राष्ट्रपति रामनाथ गोविन्द द्वारा राष्ट्रपति भवन में आयोजित कार्यक्रम में झारखण्ड से कोल्हान क्षेत्र के सरायकेला खरसावां जिले की राजनगर प्रखण्ड की एक आदिवासी महिला चामी मुर्मू को नारी शक्ति पुरस्कार-2019 से सम्मानित किया गया। चामी को दो लाख रुपये और एक प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। कार्यक्रम में केन्द्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री स्मृति ईरानी एवं वित्त मंत्री निर्मला सीमारमण भी उपस्थित थीं।

सम्मान प्राप्ति के बाद चामी मुर्मू ने कहा कि यह सम्मान उन सभी महिलाओं को समर्पित है जो मेरे साथ कदम से कदम बढ़ाकर चलीं। अपने सहयोगी व्यवहार और कार्यशैली के कारण ही चामी को झारखण्ड की महिला टार्जन की उपाधि से सुशोभित किया गया है।

सेवा का फल

श्रीनिवास नाम का एक बालक अपनी दादी के साथ एक नए गाँव में रहने आया। वे दोनों गाँव के साहूकार के पास पहुँचे। साहूकार अपने आंगन में कुरसी पर बैठा था। दादी और पोते ने साहूकार को प्रणाम किया।

दादी ने उससे कहा, 'मालिक! हम दूसरे गाँव से आए हैं। अब यहीं रहना चाहते हैं। आप हमें सिर छिपाने की जगह दे दें। बदले में हम आपके घर के काम कर देंगे।'

साहूकार ने मन में सोचा-- 'बिना दाम के दो मज़दूर मिल रहे हैं। इन्हें क्यों छोड़ा जाए?' वह मान गया। उसने घर के पिछवाड़े उन्हें रहने की जगह दे दी।

दादी ने पूछा, 'साहूकार जी! इसका किराया क्या लगेगा?'

साहूकार ने झट से बताया, 'मेरे घर में चार भैंसें, तीन बैल और चार गायें हैं। उन सबको चराना होगा। उनके गोबर को पाथकर उपले बनाने होंगे और उपले बेचकर उनके पैसे मुझे देने होंगे। वही उसका किराया होगा।'

दादी और पोते ने साहूकार की शर्त मान ली।

उसी दिन से दादी तो साहूकार के घर का काम करने लगी और पोते ने गाँव में ही कोई काम ढूँढ़ लिया। उनका जीवन चलने लगा।

एक दिन की बात है। साहूकार के दरवाज़े पर फटेहाल एक भिखारी आ गया। साहूकार ऊँची आवाज़ में बोला, 'चलो-चलो, आगे बढ़ो! मेरे पास कुछ नहीं है ।

वह भिखारी घूमकर पिछवाड़े की ओर आ गया। दादी को उसपर दया आ गई। घर में जो खाना बना हुआ रखा था, वह उसने भिखारी को दे दिया।

विदा होने से पहले भिखारी दादी की हथेली पर एक दमड़ी रखते हुए बोला, 'माँ, तुम इससे अपने पोते के लिए मुरमुरे खरीद लेना।'

दादी ने उस दमड़ी को अपनी संदूकची में रख दिया। वह सोच में थी कि आज अपने पोते को क्या खिलाएगी! तभी उसका पोता खेत से आया। वह भूखा था। दादी ने पोते को सारी बात बताई और कहा, 'संदूकची में से दमड़ी लेकर कुछ खरीद ला।'

जैसे ही पोते ने संदूकची खोली, सोने की चमक से सारी झोंपड़ी जगमगा उठी।

उन्होंने सोना बेचकर सुंदर मकान बनाया, ज़मीन खरीदी, बैल खरीदे और बड़े किसान बन गए।

उनकी समृद्धि देखकर साहूकार को बहुत पछतावा हुआ। साहूकार समझ गया कि भिखारी के भेष में भगवान आये थे और उसने उन्हें दुत्कार दिया। इसके बाद से साहूकार का व्यवहार हमेशा के लिए बदल गया।

प्रश्न मंच के उत्तर

1. ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी (सन् 1664)। 2. स्वामी रामानन्द। 3. अजित डोभाल। 4. भाला फेंक। 5. बघन खा। 6. दत्तात्रेय होसबले । 7. शिप्रा नदी। 8. जरनल विपिन रावत। 9. महाराष्ट्र। 10. भास्कराचार्य द्वितीय।

केवल लक्षणों का नहीं रोग का उपचार करें

मानव शरीर में किसी रोग के प्रवेश कर जाने और उसके बढ़ने पर उसका पता रोग के कुछ लक्षणों से ही पता चलता है। उनमें मुख्य हैं पीड़ा होना और ज्वर होना। पीड़ा चाहे फिर गले में हो, पेट में हो, या शरीर के अन्य अंगों में जैसे कि जोड़ों आदि में, इसका कारण भिन्न-भिन्न रोग हो सकते हैं। यहां समझने की बात यह है कि पीड़ा अर्थात् पेन हमारे शरीर का एक उत्तम सूचना तंत्र है। पीड़ा स्वयं में रोग नहीं है, उससे तो आपको केवल सूचना मिल रही है कि आपके शरीर के किसी भाग में या किसी महत्वपूर्ण अंग में कोई समस्या है, रोग है। ऐसे में हम प्रायः पीड़ा को कम करने वाली अर्थात् उस सूचना तंत्र को रोकने वाली औषधियाँ ले लेते हैं। अब बताएं की यदि आपको छाती में अत्यधिक पीड़ा है और बाईं बाजू की ओर भी जा रही है तो आप अनुमान लगाते हैं कि आपके हृदय में कोई समस्या आई है। तो क्या आप उस समय केवल पीड़ा का उपचार करेंगे या अपने हृदय विशेषज्ञ के पास शीघ्रातिशीघ्र जायेंगे। ऐसे ही हमें अपनी पीड़ा को कम करने की चिंता करने की अपेक्षा यह सोचना चाहिए कि जिस रोग की वह सूचना दे रही है उस समस्या का निदान ढूंढा जाए।

परन्तु ज्वर तो केवल सूचना का एक तंत्र ही नहीं वास्तव में यह तो शरीर के उस रोग का उपचार भी है। ज्वर चढ़ना हमारी रोग प्रतिरोधी क्षमता की एक ईश्वर द्वारा दी गयी प्राकृतिक प्रतिक्रिया है क्योंकि हमारी वायरस के विरूद्ध एण्टीबाडीज़ बनाने वाली बी और टी कोशिकाएं ज्वर होने पर ही अच्छा काम करती हैं और वायरस को शरीर से समाप्त कर पाती हैं। सारा शरीर विज्ञान और अनुसंधान केवल यही बात बताता है। ज्वर आने और उस समय शरीर में होने वाली पीड़ा साथ ही शरीर को विश्राम करने पर विवश भी कर देती है, क्योंकि शरीर की ऊर्जा को रोग से लड़ने में लगना होता है। यदि आप उस समय अधिक चलेंगे, दौड़ेंगे, काम करेंगे तो शरीर की ऊर्जा उस ओर लगेगी। पर यदि विश्राम करेंगे तो शरीर की ऊर्जा रोग से लड़ने में अधिक लगेगी। ऐसे ही जब अधिक ज्वर होता है तो रोगी का कुछ खाने को मन नहीं करता। यह भी ईश्वर के बनाए इस मानव शरीर की अद्भुत संरचना है। क्योंकि यदि रोग से लड़ना है और उस समय आप अधिक खाएंगे तो शरीर की ऊर्जा को पाचन में भी काम करना पड़ेगा। प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ प्रायः ज्वर में रोगी को कुछ भी न खिलाने, केवल गर्म पानी या कुछ फलों का जूस आदि देने और विश्राम करने को कहते हैं। आयुर्वेद भी औषधि के साथ इन्हीं बातों पर अधिक बल देता है।

ऐसे ही शिरोवेदना अर्थात् सिर के दर्द के अनेक कारणों में प्रमुख हैं पेट का स्वच्छ ना होना, आंतों में गैस का बनना। प्रायः देखा गया है कि लोग इसे माइग्रेन का नाम देकर मस्तिष्क के उन कोशिकाओं और सूचना तंत्रों को सुन्न करने वाली औषधियां खाते रहते हैं जिन्होंने हमें उस समस्या अथवा रोग की केवल सूचना मात्र देनी थी। उस सूचना तंत्र को रोकने को जिस प्रकार के केमिकल हम खा रहे हैं उससे यकृत, गुर्दे और यहां तक कि हृदय आदि को भी हम अत्यधिक हानि पहुंचा रहे हैं। आप सुनकर आश्चर्यचकित होंगे कि छोटे बच्चों को सिर दर्द के लिए दी जाने वाली सैरीडॉन दवा से उनके मस्तिष्क में एडिमा या कहें पानी भर जाने जैसी स्थिति बन जाती है जिससे उनमें से कई को जीवन भर मिर्गी की भांति दौरे आते रहते हैं। हजारों लोग बार-बार दर्दनाशक दवा खा अपनी किडनी खराब करके आज किडनी प्रत्यारोपण के लिए दानकर्ता ढूंढ रहे हैं।

आज इस कोरोनावायरस के काल में जो भय का वातावरण बना हुआ है, घर-घर में लोग बीमार पड़े हैं, चिकित्सकीय सुविधाएं चरमरा गई हैं, किसी डॉक्टर को सिर उठाने का भी समय नहीं मिल रहा है, ऐसे समय में हर व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह सोचे कि किस प्रकार हम अपने रोगियों को व्यर्थ की कठिन समस्याओं से बचा सकते हैं, क्या हम रोग को छोड़ केवल उसके लक्षणों का इलाज करने में इतने उग्र हो रहे हैं कि उससे रोग भी बढ़ रहा है और हमारे फेफड़े तक खराब हो रहे हैं लोग मृत्यु लोक की ओर जाते जा रहे हैं।

-विवेकशील अग्रवाल
(स्वास्थ्य सम्बन्धित शोधकर्ता, समाज सेवी एवं व्यवसायी)

कृषि को लाभकारी बनायें मिट्टी की जाँच करायें

कृषि प्रबन्धन अनुभवी वृद्धजनों की हमेशा सलाह रहती है कि किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पहले सोच-विचार कर कार्य योजना तैयार कर लेनी चाहिये क्योंकि सोच-विचार कर योजना बनाने से कार्य में ज्यादा सफलता के साथ-साथ श्रम, धन व संसाधन की बचत होती है।

जैविक कृषि प्रबंधन को तैयार करने की पद्धति को हम विस्तार से समझेंगे जिससे कृषि एवं कृषि आधारित व्यवसायों में लगने वाली अनावश्यक लागत को नियंत्रित कर कृषि को ज्यादा लाभकारी बनाया जा सके।

कृषि को लाभकारी बनाने के लिये कृषि के साथ-साथ बागवानी, वानिकी, पशुपालन, मधुमक्खी पालन, मछली पालन तथा रेशम उत्पादन को अपनाना होगा। कृषि को उद्योग मानते हुए सर्वप्रथम खेत की वार्षिक व दीर्घकालिक योजना बनाकर ही कार्य करना चाहिये।

योजना बनाते समय ध्यान में रखें कि किसान के पास उपलब्ध प्राकृतिक संसाधन कितने हैं। मिट्टी-पानी की जाँच करवाकर जाँच के अनुसार ही फसलों का चयन करें। मिट्टी की किस्म पथरीली, हल्की, दुमट या भारी कैसी है? मिट्टी की गहराई (मिट्टी में कितनी गहराई में पत्थर है) कितनी है? उस क्षेत्र का मौसम (जलवायु) कैसा है? बरसात कब व कितनी होती है? सर्द-गर्म हवायें कितने समय रहती हैं? खेत से बाजार की दूरी, उत्पादन परिवहन के साधनों की उपलब्धता, जमीन जहाँ पर आयी हुई है उस क्षेत्र की आवश्यकता आदि बातों की जानकारी लेकर ही फसल योजना बनानी चाहिये।

कृषि एवं उसकी सहयोगी गतिविधियों के बीच तालमेल बिठाना ही बेहतर कृषि प्रणाली है। यह प्रणाली समझ में आने पर न्यूनतम खर्च पर अधिकतम पैदावार प्राप्त की जा सकती है।

मिट्टी की जाँच वर्ष में एक बार मिट्टी की जाँच अवश्य करनी चाहिये। साधारणतया रबी फसल के पश्चात तवी लगाकर छोड़ने के एक मास बाद मिट्टी के नमूने लेकर जाँच करवानी चाहिये। मिट्टी की लवणीय, अम्लीय व क्षारीय जाँच के साथ मुख्य एवं सूक्ष्म तत्वों तथा जीवांश की भी जाँच करवानी चाहिये।

जाँच के सिफारिशानुसार जिप्सम, जीवांश खाद (कम्पोस्ट, वर्मीकम्पोस्ट, सूपर कम्पोस्ट, रोक फास्फेट, पायराइट, खली की खाद आदि) की मात्रा जमीन में देनी चाहिये। फसल लेने के 15 से 20 दिन पहले जीवांश खाद को जमीन में मिलने का सही समय होता है।

(1) जाँच के लिये नमूना लेते समय ध्यान रखने योग्य बातें

• खेत की मिट्अी का नमूना साफ प्लास्टिक की थैली में लेना चाहिये। धातु के पात्र में नहीं लेना चाहिये।

• नमूना एकत्रित करते समय खेत के ढाल तथा मिट्टी के रंग व गठन, फसल प्रबन्ध, फसल चक्र आदि बातों पर ध्यान देना चाहिये। यदि इनके कारण खेत में असमानता हो तो जितना क्षेत्रफल समान हो, नमूना यहीं से एकत्रित करना चाहिये।

• मेड, पेड़ के नीचे, ढलान, खाद के ढेर, रास्ते, सिंचाई की नाली या कहीं पर सख्त परत है। (उसका नमूना अलग से लेना चाहिये) तो ऐसे स्थानों से मिट्टी का नमूना कभी नही लेना चाहिये।

मिट्टी नमूने की गहराई

सामान्यतः सही गहराई वह होती है जहाँ तक पौधों की जड़ों को अधिकांशतः पोषण प्राप्त होता है जोकि सभी फसलों के अनुसार अलग-अलग होती है।

• अनाज व सब्जी की खेती के लिये नमूना 15 से 20 सेंटीमीटर की गहराई से लेना चाहिये।

• चारागाह घास के मैदान हेतु नमूना 10 से.मी. से लेना चाहिये।

• बागों (फलों) में मिट्टी का नमूना 15-15 से.मी. गहरी परतों से अलग-अलग 1 मीटर की गहराई तक लेना चाहिये।

• समस्याग्रस्त मिट्टियों में ऐसे स्थानों से अलग नमूना लेना चाहिये, जहाँ फसल की वृद्धि अन्य स्थानों से कम हो अथवा पोषक तत्वों की कमी के लक्षण विद्यमान हो। हमेशा मिट्टियों में भौतिक रूप से अलग दिखाई देने वाले सभी स्थानों से अलग नमूना लेना चाहिये।

नमूना एकत्रित करने की विधि

• खेत समतल हो और पूरे खेत में एक ही फसल उगाई गई हो तथा खाद की समान मात्रा खाली गई हो तो पूरे खेत से एक ही संयुक्त नमूना लेना चाहिये।

• नमूना लेने से पहले यह आवश्यक है कि जिस स्थान से नमूना लेना है वहाँ की ऊपरी सतह से घास आदि को साफ कर देना चाहिये। नमूना एकत्रित करने के लिये 15-20 स्थान का चयन करना चाहिये।

• सबसे पहले 15 से 20 से.मी. (बागों में 1 मीटर) 'V' आकार का गहरा गड्ढा बनाते हैं। फिर खुरपी या फावड़े की सहायता से इसकी दीवार के साथ-साथ पूरी गहराई तक की मिट्टी की एक समान परत काटकर किसी साफ बर्तन में एकत्र करते हैं।

• मिट्टी के नमूनों को छाया में सूखाना चाहिये क्योंकि धूप में सुखाने से नमूने में उपस्थित पोषक तत्व में अवांछनीय परिवर्तन हो जाता है। छाया में सूख जाने के बाद नमूनों के ढेले (लकड़ी के डण्डे से) फोड़कर, कंकड़, पत्थर तथा खरपतवार पौधों की जड़ें आदि को निकालकर फेंक देना चाहिये।

• मिट्टी के नमूनों को फिर 2 मि.मी. की छलनी से छानकर, नमूने को खूब अच्छी तरह मिलाकर उसमें से लगभग 500 ग्राम मिट्टी के दो नमूने अलग-अलग साफ कपड़े या प्लास्टिक की थैली में लेना चाहिये।

• एक कागज पर खेत का क्रमांक, किसान का नाम व पता लिखकर, मिट्टी के नमूने की थैली में व दूसरा कागज थैली के मुंह पर बांध देना चाहिये। कागज पर खेत का विवरण (पूर्व में ली गई फसल तथा आगे लेने वाली फसल का नाम) भी लिखना अच्छा रहता है।

• मिट्टी के दो नमूने लिये उनमें से एक नमूना पोषक तत्व की जाँच के लिये तथा दूसरा नमूना लवणीय क्षारीय जाँच के लिये प्रयोगशाला में देना चाहिये।

• मिट्टी जाँच के आधार पर एवं फसल विशेष की संस्तुति के अनुसार ही खादों का प्रयोग करना चाहिये। खाद का प्रबन्धन एक फसल में न करके पूरे फसल चक्र में अपनाना चाहिये। जैविक खादों के साथ दहलनी फसलों का समावेश तथा दलहनी फसलों में जैविक उर्वरकों का प्रयोग करना चाहिये। खनिज से प्राप्त उर्वरक जैसे- रॉक फॉस्फेट, पाइराइट, जिप्सम आदि काम में ले सकते हैं।

- रतनलाल डागा

स्मरणीय दिवस

5 जून माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर (श्री गुरुजी) का निधन, 1973 ई.।

12 जून क्रांतिकारी उधमसिंह को लंदन में फाँसी, 1940 ई.

18 जून झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का बलिदान (1858 ई.)।

20 जून सिंध के राजा दाहिर का बलिदान (712 ई.)।

21 जून हल्दीघाटी का युद्ध, माना झाला का बलिदान। महाराणा प्रताप के घोड़े चेतक का निधन (1576 ई.)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक केशवराव हेडगेवार का निधन 1940 ई.।

23 जून छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक (ज्येष्ठ शुक्ल 13)। क्रांतिकारी राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी का जन्म (1901 ई.)। भारतीय जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी का श्रीनगर में निधन (1953 ई.)।

24 जून कबीर जयन्ती 1398 ई.। (ज्येष्ठ पूर्णिमा, 1455 विक्रमी)

24 जून रानी दुर्गावती का बलिदान 1564 ई.।

25 जून श्री गुरु हरगोविन्द सिंह जयंती (आषाढ़ कृष्ण 1)।

26 जून 'वंदे मातरम्' के रचयिता बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय का जन्म (1838ई.)।

प्रश्न मंच

1. शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक कौन-सी तिथि को हुआ?
2. संत कबीर के गुरु का नाम बताइए?
3. भारत के वर्तमान राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार कौन हैं?
4. टोक्यो ओलम्पिक के लिये चयनित खिलाड़ी नीरज चोपड़ा किस प्रतियोगिता में भाग लेंगे?
5. उस शस्त्र का नाम बताइये जिसकी सहायता से शिवाजी महाराज ने अफजल खाँ का मारा?
6. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वर्तमान सरकार्यवाह कौन हैं?
7. उज्जैन तीर्थ नगरी किस नदी के तट पर स्थित है?
8. भारत की तीनों सशस्त्र सेनाओं का प्रमुख कौन है?
9. सिखों के पाँच प्रमुख गुरुद्वारों में से एक 'गुरुद्वारा हजूर साहब नांदेड़' किस प्रान्त में है?
10. संस्कृत में गणित की पुस्तक लीलावती किस गणितज्ञ की रचना है?

(पृष्ठ 19 का शेष)

में था प्रेण्डरगास्ट ने अपने रिपोर्ट में लिखा हैं, 'There is hardly a village, great or small, throughout our territories, in which there is not at least one schæl, and in large villages, more.

उन्ही दिनों बंगाल में इस सर्वेक्षण का काम किया विलियम एडम ने। 1796 में स्कॉटलैंड में जन्मे विलियम, बाप्टिस्ट मिशनरी के रूप में सन 1818 में भारत आए। तब मराठों को हराने के बाद, अंग्रेजों ने लगभग पूरे देश पर अपनी हुकूमत कायम कर ली थी। विलियम 27 वर्ष भारत में रहे। यहां वे राजा राम मोहन रॉय के संपर्क में भी रहे।

लॉर्ड विलियम बेंटिक उन दिनो भारत के गवर्नर जनरल हुआ करते थे। अंग्रेजी सत्ता की राजधानी कलकत्ता थी। बेंटिक ने, विलियम एडम्स को शिक्षा विभाग में अधिकारी पद पर नियुक्त किया तथा उन्हे बंगाल और बिहार की पाठशालाओं के बारे में रिपोर्ट देने को कहा।

विलियम एडम्स ने सन 1835 से 1838 तक, तीन रिपोर्ट प्रस्तुत किए, जो 'एडम्स रिपोर्ट्स' के नाम से प्रसिद्ध हैं। अपने पहले रिपोर्ट में एडम लिखते हैं, 'बंगाल (उस समय का पूरा बंगाल, अर्थात आज का बंगला देश मिलाकर) और बिहार में एक लाख के लगभग पाठशालायें हैं। इन दोनों प्रान्तों की जनसंख्या चार करोड़ के बराबर हैं। अर्थात प्रति 400 व्यक्तियों पर एक पाठशाला हैं।

विलियम एडम ने जिसे पाठशालाएँ कहा हैं, वे सारी बड़ी - बड़ी पाठशालाएँ नही हैं। उन में से अधिकतर पाठशालाएँ, मंदिरों मे, खुले आहाते में, बरगद के पेड़ के नीचे या पढ़ाने वाले अध्यापक के घर पर लगती हैं। सभी प्रकार की मूलभूत प्राथमिक शिक्षा यहाँ दी जाती हैं।

कोरोना महामारी में स्वयंसेवकों द्वारा सेवा कार्य

मेरठ महानगर में सेवा भारती द्वारा रक्तदान शिविर एवं मुरादनगर में टीकाकरण केन्द्र पर प्रशासन का सहयोग

चंदौसी में सेवा भारती द्वारा निःशुल्क आइसोलेशन केन्द्र एवं धामपुर में काढ़ा एवं मास्क वितरण करते स्वयंसेवक

नोएडा में अंतिम संस्कार में सहयोग एवं हरनन्दी में टीकाकरण केन्द्र पर प्रशासन का सहयोग करते स्वयंसेवक

पंजीयन संख्या (RNI) 46176/87 डाक पंजीयन संख्या : मेरठ - 151/2018-2020

कोरोना महामारी में विभिन्न संगठनों द्वारा सेवा कार्य

विश्व हिन्दू परिषद कार्यकर्ता पुजारियों के लिये भोजन एवं पशुओं के लिये चारे की व्यवस्था करते हुए

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् कार्यकर्ता टीकाकरण केन्द्र पर सहयोग एवं घर-घर जाँच करते हुए

कार्यकर्ताओं द्वारा मास्क, काढ़ा एवं भोजन वितरण

स्वामी विश्व संवाद केन्द्र न्यास के लिये **मुद्रक, प्रकाशक** आनन्द प्रकाश द्वारा उर्वशी प्रिन्टर्स, 110, नौचन्दी कम्पाउण्ड मेरठ में मुद्रित तथा केशव भवन, 105, आर्यनगर, सूरजकुण्ड रोड, मेरठ से प्रकाशित। **सम्पादक** : अजय मित्तल

दूरभाष : 9719545759 **ई-मेल** : rashtradevmeerut@gmail.com

सेवा में